kissekahani.com

सर्वोदय बाल पुस्तकालय
पु०सं०.....
बिलौरी

कप्पू की तो जैसे जान निकली जा रही है! निन्नी सबसे छोटी है—छह साल की. कप्पू ने उसे तब देखा था, जब वह केवल एक साल की थी. उसके बाद चाचा मद्रास चले गए थे और फिर आए ही नहीं थे. नन्ही-सी निन्नी अब कितनी बड़ी हो गई होगी और फिर भी सब उसे नन्ही-सी समझते होंगे!...सोच कर कप्पू मुस्करा उठा.

पांच वर्षों में बबलू और मुन्ना भी न जाने कितने बड़े हो गए होंगे. बबलू और मुन्ना भी सोच रहे होंगे कि कप्पू भी जाने कितना बड़ा हो गया होगा. वे सब एक-दूसरे को देख कर कितने चौंकेंगे! ओह, कितना मजा आएगा!

मां चिट्ठी पढ़ चुकी थी; उसे वापस लिफाफे में रखती हुई बोली, "तेरे चाचाजी आज से ठीक सात दिनों बाद जयपुर आ जाएंगे."

मां ने लिफाफा कप्पू की ओर बढ़ा दिया. कप्पू भाग कर अपने छोटे-से कमरे में चला गया. वहां उसने लिफाफे में से चिट्ठी निकाली, पढ़ी. फिर से पढ़ी. चिट्ठी खत्म होने के बाद जो थोड़ी-सी जगह बची थी, उस में मुन्ना ने कप्पू के नाम कुछ लाइनें लिख दी थीं. निन्नी से बड़ा था बबलू और बबलू से बड़ा था मुन्ना. जब चाचा जयपुर में थे, तब सबसे ज्यादा दोस्ती कप्पू और मुन्ना में ही थी. बबलू और निन्नी छोटे होने के कारण उन दोनों से जरा कट कर रहते थे—लेकिन उन सभी में बहुत गहरी दोस्ती थी. इस दोस्ती की गहराई कप्पू ने तब महसूस की थी, जब चाचा सपरिवार जयपुर छोड़ कर चले गए थे. तब कप्पू को मुन्ना जितना याद आया था, उतने ही निन्नी और बबलू भी याद आए थे...

चिट्ठी दोबारा पढ़ कर कप्पू ने वापस लिफाफे में रखी. शाम को पिताजी जब काम पर से वापस आएंगे, तब चिट्ठी उन्हें न केवल देनी होगी, पढ़ कर सुनानी भी होगी. याने, कप्पू इस खुशखबरी को तीसरी बार भी पढ़ेगा...ओह!

उसी समय कप्पू का ध्यान लिफाफे की दाहिनी ओर लगे एक टिकट पर चला गया. पहली बार उसने गौर किया कि टिकट पर डाक घर की मुहर नहीं लगी थी. मुहर कुछ इस तरह तिरछी लगी थी कि टिकट बिल्कुल साफ बच गया था.

पहले के लिफाफे पंद्रह पैसों के हुआ करते थे. अब वे बीस पैसों के होने लगे हैं. जिनके पास पुराने लिफाफे हैं, वे पांच पैसों का टिकट और लगा कर भेजते हैं. चाचा ने यही किया है. पांच पैसों का यही टिकट बिल्कुल साफ बच गया है...

कप्पू की आंखें खुशी से चमक उठीं. पिताजी शाम को आएंगे, तब यह थोड़े ही पूछेंगे कि लिफाफा कहां है. उन्हें तो चिट्ठी से मतलब—और कप्पू चिट्ठी को पानी में डुबाने से रहा! वह डुबाएगा लिफाफे को. कुछ देर में गोंद ढीला पड़ जाएगा. पांच पैसों वाला टिकट बड़ी सफाई के साथ लिफाफे से अलग हो जाएगा. कप्पू उसे रूमाल से पोंछेगा, फिर धूप में सुखा कर

## मनहर चौहान

kissekahani.com

डिबिया में रख लेगा.

डिबिया में उसने और भी कई टिकट जमा कर रखे हैं. करीब ढाई साल से वह इसी तरह टिकट इकट्ठे कर रहा है...अब तक कम से कम दस रुपयों के टिकट तो हो ही गए होंगे.

कप्पू के इस अजीब शौक के बारे में किसी को कुछ नहीं मालूम. लिफाफों पर से टिकट उतारते हुए उसे देखा तो सब ने है, मगर कौन जानता है कि कप्पू के पास एक नहीं, दो डिबिया हैं. एक डिबिया में वह ऐसे टिकट रखता है, जिन पर डाक-घर की मुहर लग चुकी हो. दूसरी डिबिया में मुहर लगने से

kissekahani.com

रह गई, याने साफ बच गए. टिकट जमा हो रहे हैं. लिफाफों के अलावा किताबों और दीगर चीजों के बंडलों पर से भी कप्पू टिकट उतारता रहता है. बंडलों पर से तो कभी कभी दो दो रुपयों के टिकट भी साफ उतर आते हैं.

कप्पू ने सोचा था कि जब साफ टिकटों की कीमत पच्चीस रुपयों जितनी हो जाएगी, तब एकाएक पिताजी को बता कर उन्हें चौंका देगा. मां भी कम नहीं चौंकेगी!

●

छुक. . .छुक. . .छुक. . .

गाड़ी जयपुर के रेलवे प्लेटफार्म पर आ गई थी. . . कप्पू की निगाह हर डिब्बे के हर दरवाजे, हर खिड़की को टटोल रही थी.

"चाचा! चाचा! मुन्ना!" चाचा और मुन्ना जिस खिड़की से झांक रहे थे, वह डिब्बा आगे जा रहा था—कप्पू दौड़ पड़ा. कप्पू के पिताजी दौड़े तो नहीं, मगर तेज तेज चलने लगे. वह कप्पू से पीछे रह गए. मां भी पीछे रह गई.

चाचा गाड़ी से उतरे ही थे कि कप्पू उनसे लिपट गया. चाचा ने कप्पू को गोद में उठा कर चूम लिया. चाचा कुछ कुछ गंजे हो गए थे. कप्पू को वह बदले हुए-से लगे, मगर उनकी मुस्कराहट में अब भी वही पुराना प्यार झलक रहा था.

चाचा की गोद से उतरते ही कप्पू मुन्ना से लिपट गया. मुन्ना बड़ा बड़ा-सा लग रहा था. उस की बगल में ही खड़े निन्नी और बबलू भी बड़े बड़े लग रहे थे. कप्पू उन से भी लिपट गया.

उसी समय चाची की आवाज सुनाई दी, "अरे, कप्पूजी, हमारी बारी कब आएगी?" और कप्पू तब चाची से लिपट गया. उसकी आंखें नम हो गई थीं.

●

शाम को सब घूमने निकल पड़े. बुजुर्ग एक तरफ चल रहे थे, बच्चे एक तरफ. कप्पू की बातों का खजाना खत्म ही नहीं हो रहा था. निन्नी, बबलू और मुन्ना के चेहरे दमक रहे थे. निन्नी भले ही छोटी-सी थी, मगर सारी बातें समझती थी.

अचानक कप्पू ने ध्यान दिया कि निन्नी बबलू के कान में कुछ बुदबुदा रही है. कप्पू नजदीक आया और पूछने लगा, "क्या बात है, निन्नी?"

निन्नी तो चुप रही, मगर बबलू ने कहा, "यह कहती है, नहीं चलेगी."

"नहीं चलेगी? क्या नहीं चलेगी?" कप्पू ने आंखें झपकाईं. बबलू ने निन्नी की बंद मुट्ठी की ओर इशारा करते हुए कहा, "इस के पास अद्धी है. यह कहती है कि अद्धी नहीं चलेगी."

"अद्धी?" कप्पू का आश्चर्य बढ़ गया, "अद्धी क्या?"

"अद्धी याने आधा रुपया!" बबलू ने बताया और कप्पू को जोर से हंसी आ गई. पचास पैसों के सिक्के का यह नया नाम उसने पहली बार सुना था. निन्नी ने अपनी बंद मुट्ठी कप्पू की ओर बढ़ाते हुए खोल दी. पचास पैसों का सिक्का उस नन्ही-सी हथेली पर चमक रहा था. निन्नी कह रही थी, "कप्पू भैया, क्या यह अद्धी नहीं चलेगी?"

कप्पू ने अद्धी उठाई, उलट-पलट कर देखी और निन्नी को लौटाते हुए कहा, "यह खोटी है. नहीं चलेगी."

निन्नी मचल कर बोली, "चलेगी कैसे नहीं!"

बबलू ने टोका, "अभी तुम ही तो कह रही थी कि नहीं चलेगी."

"मैं तो यों ही कह रही थी!" निन्नी का जवाब था. उसी समय मुन्ना वहां आ गया. अद्धी वाले मामले का जब उसे पता चला, तो उसने भी कहा कि चला कर रहेंगे. कप्पू ने एतराज उठाया, "हमें खोटे सिक्के चलाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए."

"कोई जबरन थोड़े ही चलाएंगे!" मुन्ना हंस कर बोला, "लेकिन अगर कोई ले ही रहा हो, तो हम क्यों देने से पीछे रहें?"

कप्पू चुप रह गया. कप्पू अकेला था. निन्नी, बबलू और मुन्ना तीन थे.

अब वे लोग मिर्जा इस्माइल रोड से दायें मुड़ कर चौड़ा रास्ता की चहल-पहल में शामिल हो गए थे. किताबों की दूकानें दिखाई पड़ीं. अचानक बबलू को याद आया कि 'पराग' का नया अंक आ गया होगा. निन्नी को साथ ले कर वह दूकान की ओर बढ़ गया. थोड़ी ही देर में 'पराग' खरीद कर जब वे दोनों वापस आए, तो उन की आंखें चमक रही थीं. बबलू कप्पू के नजदीक आ कर फुसफुसाया "अद्धी चल गई!"

●

घूम-घाम कर जब वे सब थक गए, तो उन्होंने एक बढ़िया होटल में खाना खाया, फिर 'जेम' में एक हिंदी फिल्म का रात का शो देखने चल दिए. काफी रात गए घर वापस आ गए.

सुबह कप्पू की आंख कुछ देर से खुली, वह झेंप गया और जल्दी जल्दी दातून करने लगा. उसने देखा कि निन्नी, बबलू और मुन्ना आराम से टांगें फैलाए हुए सो रहे हैं. कप्पू उन तीनों को भी उठाने जा ही रहा था कि चाचीजी आ पहुंचीं और बोलीं, "सोने दो, कप्पू, रात के बहुत जगे हुए हैं."

"लेकिन, चाची," कप्पू ने कहा, "जगा तो मैं भी था."

"तो क्या हुआ!" चाची भीतर जाते हुई बोलीं, "हमारे बच्चों को वैसे भी देर से उठने की आदत है."

दातून के बाद कप्पू ने स्नान भी कर लिया, मगर चाची के तीनों बच्चे अब भी नींद में पड़े थे.

●

कप्पू के पिताजी ने अपने एक दोस्त से कह कर कार का इंतजाम किया था. दोपहर के बाद कार आ गई. सब उस में बैठे और कार आमेर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक किले की ओर चल पड़ी. कप्पू, निन्नी, बबलू और मुन्ना चारों आगे की सीट पर गड्डमड्ड हो कर बैठे थे. सब ने

बहुत बहुत कहा था कि पीछे आ कर हमारी गोद में आराम से बैठ जाओ, मगर आगे की सीट में बैठने का मजा कुछ और ही होता है. रास्ते में जगह जगह उन्होंने बंदरों की टोलियां देखीं. सब बच्चे खुश हो गए.

निन्नी और बबलू ने कहा, "हुप! हुप!"

कप्पू और मुन्ना ने कहा, "हुप! हुप!"

बंदरों ने भागती कार की ओर दांत दिखाए, "खी-खी!"

●

आमेर की चढ़ाई पार हो गई. अब वे आमेर के पुराने किले के भीतर घूम रहे थे. कप्पू के पिताजी बच्चों को समझाते जा रहे थे कि कहां बैठ कर जयपुर के राजा हाथी और शेर की लड़ाई करवाते थे, कहां रानियां रहती थीं और कहां बांदियां...

कप्पू मुन्ना से बोला, "सब से ज्यादा मजा तो तब आएगा, जब हम चिड़ियाघर देखने जाएंगे."

चाचा ने कप्पू की बात सुन ली. हंस कर बोले, "उसके पास ही अजायबघर है, क्या उसे नहीं देखोगे?"

"नहीं..." निन्नी मुंह बिगाड़ कर बोली, "अजायबघर में तो सब मरे हुए होते हैं. चिड़ियाघर में सब जिंदा होते हैं. हम अजायबघर नहीं जाएंगे."

लेकिन बबलू, मुन्ना और कप्पू ने कहा कि हम तो जरूर जाएंगे. तब निन्नी ने भी कहा कि हम भी जाएंगे...

जब सारा किला उन्होंने देखा, तब शाम झुकने लगी थी. वे दरी बिछा कर एक वृक्ष के नीचे बैठ गए और घर से जो चाय-नाश्ता लाए थे, उड़ाने लगे.

"चिड़ियाघर और अजायबघर कल शाम को देखेंगे," कप्पू की मां ने बच्चों से कहा. बच्चों ने जैसे सुना ही नहीं. वे तो उन चार-पांच बंदरों को नाश्ते की चीजें खिलाने में मशगूल थे, जो उन के नजदीक आ बैठे थे और आंखें मटका रहे थे.

●

अगले दिन सुबह आठ बजे ही घर के सब लोग तैयार हो गए. चाचीजी को थोड़ी नाराजगी अवश्य थी, क्योंकि उन के बच्चों को जल्दी उठना पड़ा था.

मद्रास से इतने दिनों बाद आए होने के कारण सब परिचितों से कम से कम एक बार मिलने के लिए जाना चाचा-चाची के लिए बहुत जरूरी था. आज से मेल-मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हो रहा था. मेल-मुलाकातों के बाद थकान उतारने के लिए शाम को सब लोग पार्क में जा कर बैठेंगे. वहीं गन्ने का रस मिलता है, उसे पिएंगे और फिर अजायबघर और चिड़ियाघर देखेंगे.

कप्पू ने अपनी जेब में हाथ डाला. वह ठगा-सा रह गया. जेब खाली थी. जेब को खाली नहीं होना चाहिए था. इसी जेब में, कल, आमेर के लिए रवाना होते समय कप्पू ने अपना माउथ आर्गन रखा था. कार में बैठे हुए या आमेर के किले में घूमते हुए उसने कई बार माउथ आर्गन बजा कर सब का ध्यान अपनी ओर खींचा था. आज जेब खाली थी. कहां गया माउथ आर्गन?

**अन्याय—**

**"कैसा अन्याय है, भाई, कल पेट-दर्द का बहाना किया तो पकड़ा गया. और आज सचमुच का जुकाम है, तो भी कोई नहीं सुनता!"**

कप्पू को अच्छी तरह याद था कि माउथ आर्गन को वह भूल से कहीं छोड़ नहीं आया था. रात को जब कप्पू सोया, तब माउथ आर्गन जेब में ही था. रातों-रात वह गायब कैसे हो गया? क्या उसे किसी ने चुरा लिया है? लेकिन किसने?

कप्पू का चेहरा उतर गया. माउथ आर्गन नया ही था. अभी दो सप्ताह पहले पिताजी ने ला कर दिया था. पिताजी अब इतनी जल्दी दूसरा ला थोड़े ही देंगे!

"अरे, कप्पू, क्या बात है?"

कप्पू ने निगाह उठाई, उसकी मां मुस्कराती हुई पूछ रही थी, "तेरा चेहरा क्यों उतरा हुआ है, रे?"

कप्पू से न रहा गया. मां से लिपट गया और रोने लगा. "क्या बात है, बेटे?" कहते हुए मां ने उसे बांहों में भींच लिया. कप्पू बोला, "मां...एक बात बताऊं? डांटोगी तो नहीं?"

"नहीं, बेटे, बता. क्या बात है?"

"मां, मेरा वह जो नया माउथ आर्गन था न..."

"हां, हां..."

"वह खो गया है."

मां मुस्कराई, "मुझे मालूम है."

कप्पू चौंक गया, "क्या कहा, तुम्हें मालूम है?"

"हां, बेटे..." और आगे की बात बताने से पहले मां ने चारों तरफ देख लिया कि कोई सुन तो नहीं रहा.

(देखो पृष्ठ ३४)

kissekahani.com

शादी बड़ी जोरदार हुई और मित्र खुशी-खुशी शरीक हुए!
हां, मित्रो, जो कुछ चाहिए बेहिचक बोलो!
और फिर...
प्यारे मित्रों और अपनी ओरसे आपको आपके बच्चे और आज की दावत के लिए हार्दिक बधाई देता हूं!
किंतु, लंबू जी, यह तो बताइए कि आपने चुपके से शादी कब कर ली?
ठीक है, ठीक है! अब शादी की दावत तुम को अलग से करनी चाहिए!
शादी?
किंतु मैं तो अभी कुंवारा हूं!
और जॉनी नामका अपना कोई मित्र भी नहीं!
ज़रा यह तार तुम तो पढ़ो!
अरे, यह तो किसी और का है!
कलुए, तू भाग क्यों रहा है?
मैं तो उस डाकिया को ढूंढ़ने जा रहा हूं। आधी गलती उसकी भी तो है!

**विनोदकुमार हड़के, नरसिंगपुर :**

गधे को घर में रखने से घर की शोभा घटती है या बढ़ती है?

बढ़ेगी, अगर स्कूल भी जाता हो!

**महेंद्रकुमार चौरसिया, रामगढ़ कैंट :**

सभी लोग मां के पेट से जन्म लेते हैं, फिर ऊंच-नीच का भेद क्यों?

क्योंकि मां के पेट में सब को हमवार करने की कोई मशीन नहीं होती!

**गुलराज जसूजा, धमतरी :**

मैं गालियों और मारपीट की एक दूकान खोल रहा हूं, क्या आप भी हमारा माल चख कर देखेंगे?

हम सैकंड हैंड चीजों के खरीदार नहीं हैं!

**नागेश्वरप्रसाद मेहता, सलेमपुर :**

बहुत-सी शिक्षित महिलाएं आजकल अपने हाथों में बड़े बड़े नख रखती हैं, क्यों?

महिलाओं को भी हथियारबंद रहना चाहिए—इसी लिए!

**गंगाधर मंगनानी, निम्बाहेड़ा :**

बच्चे राष्ट्र की संपत्ति हैं, तो बड़े क्या हैं?

इस संपत्ति को खाद-पानी देने वाले!

**रामचंद्र भगवानदास अनदाणी, वर्धा :**

'अहा' और 'आह' में क्या अंतर है?

'अ' 'हा' की पूंछ उखाड़ कर अपनी पीठ पर लगा लेता है, तो 'आह' की जाती है!

**जीवन जैन, उज्जैन :**

क्या कारण है कि एक अच्छा डाक्टर भी अपने परिवार का इलाज दूसरे डाक्टर से करवाता है?

क्योंकि उसकी डाक्टरी की कलई घर वालों के सामने पहले ही खुल चुकी होती है!

**रविरंजन, उरुलीकांचन :**

गधे से मूर्ख और कौए से चालाक कौन होता है?

आदमी के बच्चे में सब गुण मिलते हैं!

**शिवकुमार सिन्हा, बोकारो स्टील सिटी :**

कौआ काला ही क्यों होता है, सफेद क्यों नहीं?

इसलिए कि इससे उस पर किसी मतलबी दोस्त का रंग नहीं चढ़ता!

**बालमोहन दास, हैदराबाद :**

जासूसों का उनके कार्य पर सार्वजनिक सम्मान क्यों नहीं किया जाता?

इसलिए कि फूल मालाओं के किसी फूल में छिपा दुश्मन का बिच्छू उसके गले से न चिपट जाए!

**परमानंदप्रसाद सिन्हा, सहरसा :**

चंद्रलोक पर मानव जिंदा रहेगा या नहीं?

नहीं रहेगा, तो वहां जाना क्या डाक्टर ने नुस्खे में लिख दिया है!

**एम. कृष्णा राव, सोनी :**

अगर भारत सरकार ने मूंछ-दाढ़ियों पर प्रतिबंध लगा दिया, तो आप क्या करेंगे?

जो हमारे राष्ट्रपतिजी करेंगे?

**हिम्मतसिंह, डोंगरगढ़ :**

काले बाजार की रोकथाम कैसे हो सकती है?

सिर्फ गोर बाजार से सौदा-सुलुफ खरीद कर!

**तनवीर जफर, आगरा :**

आफिस का क्लर्क बनने के लिए तो कम से कम दसवीं पास करना पड़ता है, परंतु मंत्री बनने के लिए कुछ नहीं—ऐसा क्यों?

क्योंकि समय पड़ने पर विश्वविद्यालय उन्हें आनरेरी डिग्रियां प्रदान कर देते हैं!

**कस्तूरकुमार, डांगरवा :**

हमें मच्छर मुफ्त में इंजेक्शन क्यों देते हैं?

मुफ्त में हमारा खून पीने के लिए!

**कुं. लक्ष्मीसिंह देव, हजारीबाग :**

क्या कारण है कि बुद्धि खर्च करने से बढ़ती है और पैसा खर्च करने से घटता है?

बुद्धि की सलाह से पैसा खर्च किया जाए, तो वह भी बढ़ता है!

बच्चों के अटपटे प्रश्नों के चटपटे उत्तर हम इस स्तंभ में छापते हैं. जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदर से पुरस्कार मिलेंगे. जिन्हें पुरस्कार मिले हैं उनके नाम के पहले ★ का निशान लगा है. प्रश्न कार्ड पर ही भेजो और एक बार में तीन से ज्यादा मत भेजो. इस स्तंभ में पहेलियों के उत्तर नहीं दिए जाएंगे. पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.

**रमेश मोटवानी, बैतूल :**

भगवान ने शेर को शाकाहारी क्यों नहीं बनाया?

और वह शेर काम क्या करता? किसी टूटी-फूटी प्याऊ पर बैठ कर मुसाफिरों को पानी पिलाता!

**प्रकाशचंद्र पांडेय, कुमारधुबी :**

रस्सी जल जाती है, मगर उसकी ऐंठन क्यों नहीं जाती?

जलाने की जरूरत ही नहीं, उल्टी घुमाओ, ऐंठन बहुत कुछ जाती रहेगी!

**हरिप्रसाद गुप्ता, डिब्रूगढ़ :**

मैं चाहता हूं, मुझे स्वर्ग में भी 'पराग' मिलता रहे!

अच्छी बात है, वार्षिक शुल्क बराबर भेजते रहना!

**महेंद्रसिंह ठाकुर, जगदलपुर :**

दुनिया के बीच से ऊंच-नीच का पर्दा उठ जाए, तो राजा और रंक में क्या भेद रह जाएगा?

राजकुमारी और गड़रिए की शादी हो जाएगी—अगर फिल्म का डाइरेक्टर चाहे!

**बबलू, रांची :**

मेरे सपनों में अक्सर 'गधे' ही क्यों आते हैं?

भ्रातृभाव के कारण!

**जैन एम. कुमार, झुमरीतिलैया :**

नेताओं के सम्मान में तोपों की सलामी क्यों दी जाती है?

नेतागण जब स्वयं नहीं बोल रहे होते, तो बच्चों की तरह अपने चारों ओर धूम-धड़ाका पसंद करते हैं—नारों का हो या तोप के गोलों का!

रद्दी की टोकरी का आविष्कार किसने किया?

उन खत-पत्रों और रचनाओं ने जिन्हें रखने के लिए कोई फाइल नहीं मिली!

**राजेशकुमार कसेरा, कानपुर :**

रोते वक्त लोग अक्सर मुंह क्यों छिपा लेते हैं?

सूरत जो देखने लायक हो जाती है!

**एस. सेनकचंद्र सिसोदिया, कामरेडडी :**

सपना सो जाने पर आता है, जागते रहने पर क्यों नहीं?

अगर जागते हुए न आता, तो इतने आविष्कार कहां से हो पाते!

**अशोक गोयल, शिवपुरी :**

तुलसीदासजी ने बच्चों को बंदर के समान क्यों बताया है?

क्योंकि महाकवि उन्हें सीधे बंदर बता कर उनका दिल दुखाना नहीं चाहते थे!

**चंद्रेश्वरसिंह, गोरखपुर :**

मौत केवल आती ही है, जाती क्यों नहीं?

जाती तो है, लेकिन ले कर!

**अशोककुमार त्रिवेदी, मोकामा घाट :**

रात को 'मच्छर' हमारे कानों में किस 'फिल्म' का गाना सुना जाते हैं?

'प्रेमी मच्छर' का!

**कामरेड परिक्षित मिनहास, धर्मशाला :**

मंदिर व धार्मिक स्थान आजकल रिश्ता जोड़ने-तोड़ने, मुंह दिखाई, ठठ्ठा-मजाक व पापड़-छोले खाने की जगह क्यों बनते जा रहे हैं?

जब कामरेड धर्मशाला में रह सकते हैं, तब मंदिरों में ये काम क्यों नहीं हो सकते?

★ **रमेशकुमार, द्वारा जयपाल खानचंद, जयप्रकाश चौक, कोठी बाजार, बैतूल (म. प्र.):**

मक्खीचूस की पहचान क्या है?

जिसके यहां मक्खियों का आना बेरोकटोक हो और निकल पाना कठिन!

★ **एस. आर. जगवानी, द्वारा ज्ञानचंद टहलराम, सब्जीमंडी, सुजानगढ़ (राजस्थान):**

क्या कारण है कि मुझे 'पराग' गर्मियों में चांद के समान और सर्दियों में सूरज के समान लगता है?

अगर 'पराग' एअरकंडीशनर और हीटर का काम भी देता है, तो इसकी कीमत बढ़ा देनी चाहिए! ●

बंगला कहानी

# असली कुत्ता

डॉग माने कुत्ता, डगी माने एक कुत्ते का नाम; और 'र', 'त' और 'न' हिज्जे करो, तो हो जाता है रतन; जिस रतन यानी रत्न का मतलब होता है बेशकीमती पत्थर जैसे हीरा, पन्ना, माणिक. . . .नहीं, वह रतन भी नहीं. रतन एक लड़के का नाम है—लड़का लेकिन बिल्कुल बच्चा भी नहीं; १९-२० साल का होगा. कालेज में पढ़ता है, इंजीनियर बनेगा, बेहतरीन क्रिकेट खेलता है. एक दिन वह कालेज में पढ़ कर या मैदान से खेल कर घर लौट रहा था कि अचानक रास्ते में एक आदमी ने ज़रा आड़ से पुकारा —"बाबू!"

रतन ने भवें सिकोड़ कर कहा—"क्या है?"

"अलसेशियन का पिल्ला लीजिएगा?"

रतन ने उस आदमी की ओर देखा. पाजामा, कमीज और टोपी पहने हुए एक पुरबिया, उसकी बगल में कोई कांय-कांय कर रहा था. ज़रूर बावर्ची या खानसामा होगा. उसकी नाक पर एक मस्सा था. उसी से लगा.

"अलसेशियन? देखें. हूंह! यह तो देसी है!" रतन ने कहा.

"नहीं, बाबू, देसी नहीं, बहुत ऊंची नस्ल का अलसेशियन का पिल्ला है. अच्छी नस्ल का अलसेशियन छुटपन में ऐसा ही होता है, बाबू! नस्ल जितनी ही ऊंची होगी पिल्ले भी देखने में उतने ही बदसूरत लगेंगे!"

रतन अचरज से उसकी ओर देख रहा था. है तो बात सही . देसी कुत्तों के पिल्ले अपने बचपन में काफी मोटे-तगड़े रहते हैं और सयाने होते ही ठठरी भर रह जाते हैं. अलसेशियन के विषय में मामला बिल्कुल उल्टा है. सही बात है. देसी चोरी कर खाते हैं, बांधने पर रिरियाते हैं, गलियों में गंदगी मैला जो मिला चाटते फिरते हैं. अलसेशियन बिल्कुल इसके विपरीत है.

उस आदमी ने कहा, "इसकी जो मां है वह एक खास जर्मन काउंट के कुत्ते की बच्ची है, और मां की मां थी फ्रांसीसी. इसके बाप का बाप था जंगी कुत्ता, समझे, बाबू? हां, चार चार बार उसे तमने मिले थे, बाबू! यह मेरे मालिक के कुत्ते का पिल्ला है. पांच बच्चे हुए हैं; मालिक ने हुक्म दिया कि दो रख कर बाकी तीन को गर्म पानी में डुबा कर मार डालो. यह बेहद तेज पिल्ला है. इससे मैं प्यार भी करता हूं, सो इसे नहीं मार सका, बाबूजी!"

रतन का मन ललचाने लगा.

रतन बड़ा अच्छा लड़का है. लेकिन बेहद गुस्सैल भी—गुस्सा आ गया, तो शोर-शराबा मचा दे. गुस्से में उसके जी में आता कि जिस पर गुस्सा आया है, उसे मार ही डाला जाए, फिर यह भी जी करता कि अपने ही सिर पर डंडा मार कर वह खुद मर जाए, जिससे उस आदमी को बेहद अफसोस हो जिससे उसका झगड़ा हो रहा है. फिर घंटे भर बाद लंबी सांस ले कर रतन मन ही मन पछताने लगता–'ओह छी छी! कितना बेजा बात उसने सोची है!'

और भी गुण हैं उसमें. वह अपने विचार से कोई काम बुरा नहीं करता. झूठ वह बोलता नहीं और उसकी पक्की धारणा है कि दूसरे लोग भी ऐसे ही होंगे. इसलिए वह सोच ही नहीं सका कि यह आदमी झूठ बोल रहा है. उसने कहा :

"बताओ, क्या दाम चाहते हो? मैं ले लूंगा."

उसे अलसेशियन का बड़ा शौक है. लेकिन उसके घर पर एक अजीब-सी आफ़त है—उसके बाबू की मां, इत्ती-सी नाटी—बौनी, रात-दिन पूजा-पाठ करती रहती है. . .उसी के कारण कुत्ते का पालना-पोसना दुश्वार है. वरना बगल के 'दे' जी के घर पर एक बेहतरीन अलसेशियन है—नाम है बाघा. शुभ तोष के घर पर भी एक है. रत्ना के पिताजी के पास भी एक है. उसका नाम रानी है. रानी के दो-तीन बार बच्चे हुए. उन्हें बेच कर बेशक रत्ना के पिताजी को काफी रुपया मिला होगा. सुकुमार डाक्टर के यहां भी एक अलसेशियन है. बस अपने ही घर में कोई नहीं.

फिर भी वह सोच रहा था.

वह सोच रहा था. डाक्टर भट्टाचार्य के एक अलसेशियन के बारे में. बहुत ही अच्छी नस्ल का कुत्ता था

वह दवाखाने में डाक्टर साहब के पैरों के पास लेटा रहता था. एक दिन रतन अपने पिता के साथ दवाखाने गया था, तभी अचानक एक ऐसा ही पुरबिया आ कर सलाम कर डाक्टर के सामने खड़ा हो गया था...

'सलाम, डाक्टर साहब! क्यों, पहचान रहे हैं न?'

'नहीं, कौन हो तुम?'

तब तक डाक्टर साहब का अलसेशियन उठ कर अपने सामने के दोनों पैर उसके कंधों पर रख कर उसका मुंह चाटने लग गया था.

डाक्टर साहब एकदम हुंय हुंय कर उठे—'जेन! जेन! उतरो, उतरो!'

जेन उतरा और पलट कर सविनय कूं कूं कर उसने कुछ कहा.

वह आदमी तुरंत उसके गले में बांह डाल कर हंस पड़ा. डाक्टर साहब ने कहा—'अरे काट लेगा, काट लेगा!'

"नहीं, डाक्टर साहब, ये जानवर बेईमान नहीं होते!

## ताराशंकर बंद्योपाध्याय

इसने मुझे पहचान लिया. आप, हुजूर, मुझे पहचान नहीं सके, पर इसने पहचान लिया. मैं, हुजूर, बुलाकीराम हूं...जमादार!'

'अरे बुलाकीराम...! अच्छा! अच्छा! कैसे हो? कब आए?'

विशाल अलसेशियन तब उसके चारों ओर मंडरा रहा था और दुम हिला रहा था. बीच बीच में नन्हे कुत्तों की तरह कूं-कूं आवाज कर अपनी लंबी लपलपाती जीभ से उसका मुंह चाटे ले रहा था.

इसी आदमी ने इस कुत्ते को, जब वह बिल्कुल बच्चा था, डाक्टर साहब को दिया था. डाक्टर साहब ने बुलाकीराम के बच्चे का इलाज कर उसे बचाया था. वह भी यहां नहीं, इलाहाबाद में. डाक्टर साहब उस समय वहां दो महीने के लिए गए थे—उसी वक्त. उसे भी आज पांच साल गुजर चुके हैं. कुत्ते का पिल्ला उस वक्त माह भर का या डेढ़ माह का था; इतने अरसे के बाद भी इस कुत्ते को अपनी डेढ़ माह उम्र की बातें याद हैं, बुलाकी को देखते ही पहचान लिया है. उसके कंधों पर पैर रख कर उसका मुंह चाट-चूट कर कूं-कूं आवाज कर जताया है—याद है, याद है, याद है! और

kissekahani.com

पूछा है—अच्छे हो? तुम सेहत से हो?

कम से कम रतन को ऐसा ही लगा था...

उस ने खूब सोच-साच कर पैंट की जेब में जो कुछ था, झाड़-झूड़ कर निकाला और कहा, "मेरे पास यही है. यह ले कर देना हो, तो दे दो!"

"चार रुपया तीस पैसा...! नहीं, बाबू, पचास रुपए में भी नहीं मिलेगा...सिर्फ चार रुपया! नहीं, बाबू!"

"तो क्या किया जाए?"

"अपना कलम भी दे दीजिए!"

"कलम?"

कलम हालांकि कोई ज्यादा कीमत का नहीं—देसी पाइलट. काफी सस्ते में खरीदा था. उसके पास एक अच्छा कलम भी है. जरा सोच कर उसने कलम भी दे दिया और बदले में देसी पिल्ले की तरह उस मरियल-से बादामी कुत्ते के बच्चे को अपनी बगल में ले लिया. उसने दो बार रतन के मुंह की ओर देख कर कुछ सूंघा और अपनी छोटी जीभ निकाल ली मुंह चाटने के लिए.

रतन मन ही मन बोल पड़ा, खुशी को वह दबा नहीं पा रहा था—'किला फतेह! हूबहू डाक्टर साहब वाले उस अलसेशियन की तरह मुंह चाट रहा है...सूंघ रहा है... फर्स्ट क्लास!'

इसके बाद एक बहुत बड़ी लड़ाई शुरू हो गई.

लड़ाई ही कहना चाहिए—दादी के साथ लड़ाई भाई-बहनों से लड़ाई, नौकर-चाकरों के साथ लड़ाई. क्योंकि सभी कहने लगे कि देसी पिल्ला है. रतन कहता "कतई नहीं...अलसेशियन है! लेना तो अपना मुंह इसके नजदीक. देखना, फौरन तुम्हारा मुंह चाट लेगा!"

हां, डगी मुंह चाट लेता.

डॉग माने कुत्ता, और डगी माने रतन के कुत्ते का नाम!

दादी यानी वह बुढ़िया, पिताजी की मां, काफी लड़ने-झगड़ने के बाद उन्होंने पीछा छोड़ा. बाबू, अम्मा सभी लोगों ने कहा—"देसी है." रतन के कहा—"नहीं, अलसेशियन." और भी कहा—"तुम्हें अपने घर का खाना नहीं देना पड़ेगा. मैं अपनी रोटी खिला दूंगा. न हो, तो भीख मांग कर उसे खिलाऊंगा!" उसने घर के एक कोने में उसे बांध दिया. कहा—"कोई इसे खोले नहीं. इसे बंधे रहने की आदत पड़नी चाहिए." उसके लिए तरह तरह के नियम बनाए रतन ने—सुबह घुमा लाना, सिर्फ एक दफा खाना, सो भी एक ही जगह पर, एक ही बरतन में—ऐसे ही बहुत सारे नियम.

लेकिन बांधते ही डगी रोने लगा. गजब की रुलाई, करुण रुलाई, दिल-तोड़ रुलाई. रुलाई भी क्या विलाप ही कहा जाए उसे. और साथ ही साथ वह उस जगह को जब-तब गंदा करने लगा कि घर बदबू से भर गया. जमादार ने साफ करने से इंकार कर दिया. इससे भी रतन सहमा नहीं, खुद ही जगह साफ करने लगा. और इस तरह डगी पर चलने लगी हुकूमत—कान उमेठ कर, छड़ी से पीट कर, लात लगा कर. चपत-चांटा लगा कर रतन उस कुत्ते के लिए नटखट बच्चों को दुरुस्त करने वाले स्पेशल स्कूल का हेड मास्टर बन गया. नतीजा यह हुआ कि रतन को देखते ही वह चित लेट कर दो या चारों पैर ही ऊपर की ओर उठाए चिल्लाने लगता, जैसे कहता हो—मत मारो, मत मारो, तुम्हारे पैरों पड़ूं मत मारो जी, अजी और गलती नहीं होगी, अब ऐसा नहीं करूंगा, तुम्हारे पैरों पड़ूं!

●

तीन महीने का हो जाने के बाद डगी कुछ बड़ा हुआ, लेकिन चेहरे पर अलसेशियनपन कतई नहीं उभरा. उसके रोएं बदन से चिपकने लगे. दुम पतली हो कर ऊपर की ओर कुंडली मार चांद, सूरज और तारों को भी ठेंगा दिखाने लगी. सिर्फ रतन को देखते ही वह दुम उतर कर दोनों पैरों के बीच हो जाती. और वह सिर को अजीब ढंग से टेढ़ा कर कूं-कूं करके विनती करने लगता. शायद वह कहता—मालिक, मैं अलसेशियन नहीं हूं! मैं महज देसी कुत्ते का बेटा हूं. अक्ल जरा मोटी है. लाठी से पीटोगे, तो मर जाऊंगा लेकिन अलसेशियन नहीं बन सकूंगा!

लेकिन यह बात सुनने के लिए रतन कतई तैयार

## हमारी पसंद
## प्रतियोगिता नं. १९ का परिणाम

'हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. १९' के अंतर्गत 'पराग' के जुलाई अंक में प्रकाशित कहानियों के बारे में हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंद के विचार से कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. इस बार केवल एक बच्चे का हल सर्वशुद्ध आया है. बच्चे का नाम और पता निम्नलिखित है :

● **अजय गोयल, द्वारा श्री जगदीशचंद्र गुप्ता, ३ अशोक रोड, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने, इलाहाबाद (उ. प्र.).**

सही हल वाली कहानियों का क्रम इस प्रकार है :

१–हाथियों का बदला, २–दादाजी का स्कूल, ३–शेर से भिड़ंत, ४–घोर अपमान, ५–एक वीर का अंतिम संस्कार, ६–मियां लल्लन और मियां टिल्लन, ७–नाटक, ८–धरती के चूहे मंगल ग्रह पर.

नहीं. वह कहता—तुझे अलसेशियन बनना ही पड़ेगा. मैं तुझे पीट पीट कर अलसेशियन बना कर रहूंगा. और चांटे लगा कर कान उमेठ कर या छड़ी से पीट कर उसे सबक देने लगा—"डगी, सिट डाउन. . . डगी!"

डगी डर के मारे बदन मरोड़ कर अजीब ढंग से अपनी गर्दन टेढ़ी कर विनती कर कहने लगा—आंऊ आंऊ! ऊं. . .मारो मत, मालिक, मारो मत! हे दयालु मालिक! हे मेहरबान! सिट डाउन नहीं हो पा रहा हूं, दया करो!

इसके बाद रतन अपनी लपलपाती बेंत खड़का कर उसे बिठाने की कोशिश करने लगा और डगी न बैठ कर एकदम चित हो जाता और चारों पैर ऊपर की ओर उठा कर पैर जोड़ कर विनती करता, कहने लगता—मालिक मुझे मार डालो, काट डालो, लेकिन मुझ से बैठा नहीं जाता; क्योंकि बैठते ही शायद मैं अपनी नस्ल गंवा कर अलसेशियन बन जाऊंगा!

फिर भी रतन उसे पीटता. गदहा पीट पीट कर घोड़ा बनाया जाता!

'हितोपदेश' की कहानी में है कि चूहे से बिल्ली, बिल्ली से कुत्ता और कुत्ते से शेर तक बनाया जा सकता है. यह तो देसी से अलसेशियन बनाना मात्र है! रतन ने पक्का इरादा कर लिया.

इधर डगी भी पक्के विचार का है. शायद जन्म से ही वह सौगंध खाए हुए है. वह देसी है और देसी ही रहेगा. इसके अलावा वह और कुछ नहीं होगा. और इस वजह से रतन की आहट पाते ही वह भागने लगता, उसकी बू मिलते ही वह खिसक जाता—तख्त के नीचे, सीढ़ी के नीचे, छत की सीढ़ी पर; और फाटक खुला मिल जाए, तो सीधे सड़क पर. वहां हड्डी और मछली के कांटे ढूंढ़कर खाता फिरता. जो कुछ भी मिल जाता उसे चाट-चूट कर सूंघ-सांघ कर घूमता रहता. इसके बाद उसकी सोहबत और दो देसी कुत्तों से हो गई.

●

रतन का घर कलकत्ते के उत्तरी छोर पर है. घर के सामने एक मैदान है जिसमें धूल है, कीच है, मैल है, गंदगी है, डस्टबीन में जूठन है, मछली के चोंघटे हैं. डगी रास्ते पर निकल कर मैदान में पहुंचते ही दौड़-धूप करने लगता. दो और कुत्तों के साथ वह दौड़-धूप करता.

उनमें एक आधा विलायती है, तो एक आधा देसी. एक सफेद रंग का है लेकिन बदन पर गोल काले काले धब्बे हैं, दुम में घने रोएं हैं, दोनों कानों में भी बड़े काले रोएं हैं. दूसरा चितकबरे किस्म का सफेद काला मिले हुए रंग का है. कब और किस वक्त उनके साथ इसकी दोस्ती हो गई थी किसी ने नहीं देखा. लेकिन एक दिन देखा गया कि इन तीनों में बड़ी दोस्ती है. वे दोनों उम्र में बड़े हैं, डगी छोटा है, लेकिन वे अच्छी तरह से देसी-

(देखो पृष्ठ ४६)

## छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"जाड़ों में मम्मी मोटे और मुलायम कपड़े क्या पहना देती हैं कि मजा आ जाता है!"

"शायद इसी लिए हम लोग भी कुछ मोटे और मुलायम होते जा रहे हैं!"

# सेब मुहावरा पड़े

बात पिछले साल की है. मैं नैनीताल में गर्मी की छुट्टियां गुजारने के बाद वापस लखनऊ लौट रहा था. बस से बरेली पहुंच कर वहां दो दिन के लिए एक परिचित के यहां रुक गया. तीसरे दिन शाम को जब मैं लखनऊ जाने के लिए स्टेशन पहुंचा, तो भीड़ देख कर होश उड़ गए. लखनऊ वाली गाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी थी, पर उसमें तिल रखने की भी जगह न थी. बड़ी मुसीबत थी; इसी गाड़ी से जाना भी जरूरी था और यहां भीड़ के मारे नाक में दम था. मैं निराश हो कर लौटने की सोच ही रहा था कि वर्मा चाचाजी दिख गए. वह 'पार्सल वान' में खड़े बाहर झांक रहे थे. मैं खुशी से उछल पड़ा और झटपट उनकी ओर दौड़ पड़ा.

उनके पास पहुंचते ही मैं हाथ जोड़ कर बोला, "चाचाजी, नमस्ते!"

उन्होंने चौंक कर मेरी तरफ देखा, फिर पहचान कर आश्चर्य से बोले, "अरे! अनिल, तुम यहां कैसे?"

मैं चट से बोला, "क्या बताऊं, चाचाजी, लखनऊ वापस आ रहा हूं, पर गाड़ी में जगह नहीं है."

वह सीना फुला कर बोले, "यार, तु फिक्र मत कर, आज मेरी ड्यूटी इसी ट्रेन पर है. तु यहीं आ जा, मेरे होते तुझे कोई तकलीफ नहीं होगी!"

यह सुनते ही मैं खिल उठा और अंदर जा पहुंचा. थोड़ी ही देर में वर्मा चाचाजी के दो-तीन साथी और आ गए और ट्रेन चल दी. गाड़ी चलने के साथ ही चाचाजी की बातें शुरू हो गईं. बातें करते हुए उनकी नजर 'पार्सल वान' में रखी एक लकड़ी की पेटी पर रुक गई. वह उठ कर उसके पास पहुंचे, तो देखा कि पेटी में सेब आ रहे हैं. अब तो वह खुशी से उछल पड़े और हम लोगों के बहुत मना करने पर भी उन्होंने झटपट पेटी खोल डाली. और फिर हंस कर इत्मीनान से बोले, "जिसके लिए सेब आ रहे हैं, उससे कह देंगे, सड़ गए थे इसलिए फेंक दिए!"

फिर दोनों हाथों में सेब ले कर हम लोगों के पास आए और बोले, "लो खाओ, यारो!"

तभी उनके एक साथी बोले, "देखो, यार वर्मा, सारी जिम्मेदारी तुम्हारी ही रहेगी."

वह तपाक से बोले, "यार, तु सेब खा, तुझे जिम्मेदारी से क्या लेना-देना?"

हम लोग बेफिक्र हो कर खाने में जुट गए, चाचाजी सेब खा खा कर मस्त हो गए और बोले, "यार अनिल, तुम लोगों को एक लतीफा सुनाता हूं, सुनो."

हम सब संभल कर बैठ गए और बड़ी उत्सुकता से चाचाजी की तरफ देखने लगे. उन्होंने एक सेब उठाया और चबाते हुए बोले, "एक बार लखनऊ में एक बुढ़ऊ कंट्रोलर की पोस्टिंग हो गई. बड़ा ही काइयां शख्स था और नंबर एक मुफ्तखोर. एक बार मैं बनारस जाने लगा, तो मुझे बुला कर बोला—'भाई वर्मा, सुना है बनारस में साड़ियां बढ़िया मिलती हैं, तुम जा ही रहे हो, जरा मिसेज के लिए दो खरीद लाना!' तब तो मैंने 'हां' कर दी पर बाद में बड़ा गुस्सा आया. बिना बात सौ-सवा-सौ की चपत थी. सोचा कि बच्चू को वो साड़ियां ला कर दूंगा कि याद रखेगा. इसलिए बनारस से लौटने

के बाद महीने भर उसे शक्ल ही नहीं दिखाई. एक दिन उसने खुद चपरासी भेज कर बुलवाया, तो मैंने जा कर कहा—'साहब, बात कुछ ऐसी है, कि तब जल्दी में अच्छी साड़ियां नहीं मिल पाईं, पर मैंने अपने साले से कह दिया है. वह अगले महीने यहां आ रहा है. अपने साथ ले आएगा.'

"इस तरह करीब दस-बारह दिन और बीत गए. जब उसने फिर तगादा किया, तो यह कह कर टरका दिया कि साड़ियों को पालिश होने भेज दिया है, हफ्ते भर में मिलेंगी. करीब पंद्रह दिन बीते होंगे कि उसके तबादले का हुक्म आ गया. अब तो वह मेरे पीछे ही पड़ गया. मैंने कुछ टालमटोल और की, और उसके जाने से एक दिन पहले जा कर उससे कहा—'साहब, कल हम सब आपको छोड़ने आएंगे ही, बस तभी चलते समय आपको जरूर दे दूंगा.'

"अगले दिन स्टेशन जाने से पहले मैंने बहुत सारे अखबार लपेट कर एक मोटा-सा बंडल बनाया और उसे ले कर गाड़ी छूटने से कुछ ही देर पहले स्टेशन पहुंचा. वहां काफी भीड़ थी, सब उसे छोड़ने आए थे. जब ट्रेन चलने लगी, तो मैं उसके पास पहुंचा और वह बंडल देते हुए बोला—'यह लीजिए, साहब, आपकी साड़ियां, मेरी

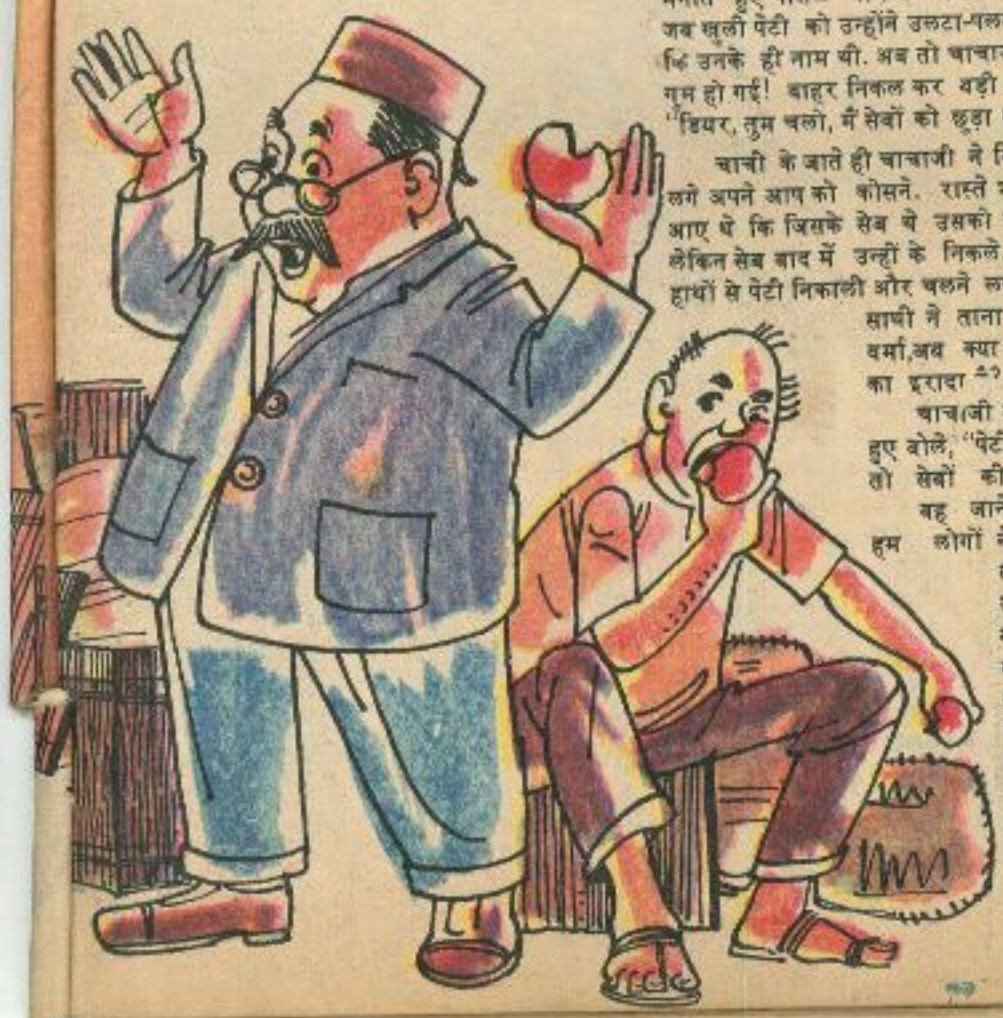

—अनिलकुमार श्रीवास्तव

जिम्मेदारी खत्म हुई.' बुड्ढ़ा का चेहरा खिल उठा, बोला—'भई, बहुत बहुत धन्यवाद!' तभी गाड़ी ने सीटी दी और तेजी पकड़ ली. मैं अपनी अक्ल की दाद देता रहा और यह सोचता रहा कि बुड्ढ़ा को कैसा बेवकूफ बनाया. उसने जब बंडल खोला होगा, तो कागज की साड़ियां मिली होंगी! मुझे गालियां देता होगा!"

वर्मा चाचाजी का लतीफा सुन कर हंसते हंसते पेट में दर्द होने लगा. सारा रास्ता बातें करने में मजे से कट गया. हां, लखनऊ पहुंचते पहुंचते गिने-गिनाए दस सेब बाकी रह गए थे.

जब गाड़ी सुबह लखनऊ पहुंची, तो प्लेटफार्म पर वर्मा चाचाजी की श्रीमतीजी खड़ी दिखाई दीं. पहले तो चाचाजी को आश्चर्य हुआ, पर बाद में सोचा कि उनको लेने आई होंगी. ट्रेन रुकते ही वे उनकी तरफ लपके और मुस्करा कर बोले, "क्यों, तुम यहां कैसे?"

वे बोलीं, "भाई ने लिख कर भेजा है कि उसने मेरे लिए एक पेटी सेब भेजे हैं, उन्हीं को लेने आई हूं."

अब वर्मा चाचाजी को काटो तो खून नहीं, चेहरा फक हो गया. बड़ी मुश्किल से मुंहे और भगवान का नाम मनाते हुए पार्सल वान के अंदर गए. भीतर जा कर जब खुली पेटी को उन्होंने उलटा-पलटा, तो मालूम पड़ा कि उनके ही नाम थी. अब तो चाचाजी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई! बाहर निकल कर बड़ी मुश्किल से बोले, "डियर, तुम चलो, मैं सेबों को छुड़ा कर लाता हूं!"

चाची के जाते ही चाचाजी ने सिर पीट लिया और लगे अपने आप को कोसने. रास्ते भर वह यही सोचते आए थे कि जिसके सेब थे उसको कैसा मजा चखाया, लेकिन सेब बाद में उन्हीं के निकले. चाचाजी ने कांपते हाथों से पेटी निकाली और चलने लगे. तभी उनके एक साथी ने ताना कसा—'क्यों, भई वर्मा, अब क्या खाली पेटी ले जाने का इरादा है?"

चाचाजी बुरा-सा मुंह बनाते हुए बोले, "पेटी भाड़ में जाए, मुझे तो सेबों की जरूरत है!"

वह जाने को मुड़े और हम लोगों ने जोरदार ठहाका लगाया. पता नहीं उसके बाद क्या हुआ. यों अब तक बेचारों से मुलाकात नहीं हुई है, पर मेरे खयाल से चाचाजी को सेब जरा महंगे पड़े!

३, कैनाल कालोनी,
सिगरा, वाराणसी—१

# कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये

**क्यों कि : एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेंटल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।**

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है, और कोलगेट-विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का...अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं

लाइन को नई पावडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पावडर से भी वे सभी लाभ मिलेंगे—एक डिब्बा महीनों चलता है।

**अब !**
**सुपर साइज़ खरीदिये**
**... पैसा बचाइये !**

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...
*दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

DC.G.38 HN

kissekahani.com

# भोलू भाई की भूल भुलैया-१२

एक दिन रविवार को भोलू भाई के हाथ में उनकी मां ने थैला थमा कर कहा, "तू बाजार जाने से बहुत कतराने लगा है. तुझे बाजार में खरीदारी करनी नहीं आती. जो जितना बोलता है, उतने ही पैसे देकर चला आता है. जा एक रुपए की सब्जी लेकर आ, जल्दी."

भोलू भाई थैला हिलाते हुए सब्जी बाजार चले. आज उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वह आसानी से बुद्धू नहीं बनेंगे. अगर दूकानदार आलू के दाम पचास पैसे किलो बोलेगा, तो वह पच्चीस बोलेंगे, और तीस-पैंतीस पैसे किलो-ग्राम पर सौदा तय करेंगे.

मगर उस दिन रविवार जो था. सब्जी किसी कारण बाजार में कम आई थी. दाम तो ऊंचे चढ़ ही गए थे, छाबड़ी वाले तक इतने व्यस्त थे कि सौदा करने की किसी को फ़ुरसत नहीं थी.

भोलू भाई जिस किसी को पचास के पच्चीस बोलते वही कह देता, "आगे जाओ"—"रास्ता देखो!" —आदि आदि. एकाध ने तो हंसी हंसी में यह भी कहा, "शाम को आना, लल्लू, बची-खुची होगी, तो दे देंगे!"

अंत में भोलू भाई झल्ला गए. उन्हें लगा जैसे साग-पात की हर दूकान पर अचानक ही 'एक दाम' का बोर्ड लग गया हो.

उसी समय वह एक बड़ी दूकान के सामने आए. वहां कई विद्यार्थी एक शो-केस के सामने खड़े थे. उस शो-केस में दो पतली और लंबी शलजमों के ऊपर एक कटहल रखा था. कटहल के ऊपर आंख-नाक-मुंह इस अंदाज में बने हुए थे कि खामखाह हंसी आती थी. कटहल का मुंह फटा हुआ था और उसमें एक टमाटर फंसा हुआ था. बैंगन की नाक थी. सिर पर बाल की जगह मटर की फलियां लगी थीं.

शीशे के ऊपर एक इश्तहार था, जो इस प्रकार था :-

"कटहल और शलजम बहुत महंगे हो गए हैं. इसलिए हमारी दूकान ने यह घोषणा की है कि जो विद्यार्थी नीचे का समीकरण सुलझा देगा, उसे इतनी ही सब्जी पुरस्कार में मिलेगी, जितनी सब्जी से यह बजरबट्टू बना है . . ."

$$\frac{\text{कटहल}}{\text{शलजम}} = \text{श}$$

अब तो भोलू भाई प्रसन्न हो गए. रुपया का रुपया घर में रह जाए और मां पर धाक जम जाए, कि बेटे राम मुफ्त में सब्जी ले आए. इसलिए भोलू भाई ने और भी ध्यान से पुरस्कार की शर्तें पढ़ीं :

"ऊपर जो समीकरण दिया है—उसे ध्यान से देखिए. इसका प्रत्येक अक्षर किसी एक अंक का सूचक है. एक दूसरे से भिन्न अक्षर अलग अलग अंक हैं. श २ के अंक से बड़ा है. पूरा समीकरण अंकों में बताओ और पुरस्कार जीतो. यह थोड़ी-सी सामान्य बुद्धि का खेल है."

अब तो भोलू भाई ने फौरन अपनी नोटबुक और पेंसिल निकाली और लगे वहीं खड़े खड़े अपनी सामान्य बुद्धि पर जोर देने.

**(बच्चो, क्या तुम भोलू भाई की मदद कर सकते हो? यदि हां, तो करो समीकरण को हल. अपने उत्तर १५ दिसंबर तक पोस्ट कार्ड पर नीचे दिया हुआ टोकन चिपका कर भेजो. एक टोकन केवल एक नाम से भेज सकते हो. बिना टोकन चिपके हुए पोस्ट कार्डों पर विचार नहीं किया जाएगा. जिनके उत्तर सही होंगे उनके नाम फरवरी '६९ के अंक में छापे जाएंगे, उत्तर इस पते पर भेजो : भोलू भाई की भूलभुलैया नं. १२, 'पराग', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बम्बई—१.**

कहानी

# संतू का खरगोश

मेरी उम्र उस वक्त करीब चौदह वर्ष की रही होगी. छोटा भाई सनत, जिसे हम लोग संतू कह कर पुकारते थे, आठ साल का था. संतू बड़ा कमजोर-सा था, जरा सी डांट-फटकार पड़ने पर ही उसे बुखार आ जाता था और बुखार चढ़ते ही वह आंय-बांय बकने लगता था. इसलिए मां हमेशा उसका ध्यान रखती थीं. संतू मेरा बड़ा आज्ञाकारी था, इसलिए हम दोनों में कभी झगड़ा नहीं होता था.

संतू ने एक बार मुझ से कहा, "दादा, कुछ पाल लिया जाए, तो कैसा रहे? भूलू जैसे कबूतर पाले हुए हैं या रूमू भाई कुत्ता. हमें कुछ मिल नहीं सकता क्या?"

मैंने कहा, "अच्छा, देखता हूं."

मुहल्ले के पंसारी की दूकान के पिछवाड़े बिल्ली ने बच्चे दिए थे. अगले दिन ही एक उठा लाया. घर का आंगन पार करते न करते मां ने मुझे पकड़ लिया. हाय-हाय करती हुई वह बोल पड़ी, "क्या बला ले आया, संतू के देखने से पहले ही इसे दफा कर!"

और बिल्ली का बच्चा बिदा हो गया.

संतू की बेचैनी देख कर मुझे भी लगता कि सचमुच घर में कोई न कोई पालतू प्राणी होना ही चाहिए. अंत में मौका मिल ही गया. पिताजी को फूलों के पौधों का शौक था. रथ के मेले से कुछ बेले के पौधे लाने के लिए उन्होंने कुछ पैसे दिए थे. मेले में एक जगह पिंजरों में तरह तरह के पंछी दिखाई पड़े—तोता, मैना, काकातुआ, मुनमुनिया, रंगे हुए गौरैये, कबूतर—और न जाने क्या क्या. एक खूंटी से बंधा हुआ लंबी लंबी आंखों वाला एक हिरन भी था. उसी पर मेरा मन ललचाया लेकिन दाम पूछने की हिम्मत न पड़ी. जानता था कि खुद को बेचने पर भी हिरन के दाम मेरे पास नहीं हो सकते. बहुत देर तक खड़े खड़े हिरन को देखता रहा था, तभी अचानक एक बक्से में कुछ खरगोशों पर नजर पड़ी. उनकी आंखें लाल लाल थीं और बदन मखमल-सा नर्म और सफेद! देखने में बेहद खूबसूरत. क्षणभर में मैं हिरन के बारे में भूल गया. डरते डरते दाम पूछे. पिताजी ने जो पैसे दिए थे, कुछ उनमें से और कुछ अपने पास से मिला कर खरगोश खरीदा जा सकता है, लेकिन पिताजी के बेले के

मोहनलाल गंगोपाध्याय

पौधों का क्या होगा?

जाने दो! चंद फूल के पौधों के लिए ऐसा खरगोश गंवाया नहीं जा सकता. इसके लिए अगर मार भी खानी पड़े, तो कोई बात नहीं.

खरगोश खरीद कर घर आया. मां के देखने से पहले ही चुपचाप जा कर संतू के हाथों में उसे सौंप दिया. खरगोश पाने पर संतू का व्यवहार देख कर मुझे फिक्र होने लगी. मैंने कहा, "अरे संतू, ज्यादा मत उछल. अगर तुझे बुखार आ गया, तो मेरी पीठ की तो खैरियत है नहीं, तिस पर यह खरगोश भी बिदा कर दिया जाएगा!"

मां ने देखते ही एतराज शुरू कर दिया—"कहां रखोगे? क्या खिलाओगे? यह सब बखेड़ा क्यों जुटा लाते हो?"

हम लोगों ने सब सोच रखा था. कहा, "छत पर पड़े पुराने बक्स के अंदर रहेगा. और भात तो हम लोगों के यहां हमेशा ही काफी फेंक दिया जाता है, वही थोड़ा-सा दे देना, खाएगा भी कितना?"

मां नाखुश होकर बोलीं, "उन्हें आने दो, देखना क्या होता है?"

पिताजी ने आकर देखा—छत के कोने में पुराने लकड़ी के बक्से और जाली से खरगोश का दरबा तैयार हो गया है. फिर जब देखा कि उनके फूल के पौधे कम खरीदे गए हैं, तो समझ गए और मुझे घसीटते हुए नीचे ले गए. मैं तैयार ही था. पिताजी एकाएक बेहद बिगड़ जाते थे लेकिन उनका गुस्सा ज्यादा देर तक नहीं टिकता था, इसका मुझे पता था.

हमारे पीछे पीछे संतू भी नीचे उतर आया है, यह हम लोगों में से किसी को मालूम न था. अचानक संतू को देख कर पिताजी ने तेज आवाज में कहा, "तू यहां क्या करने आया है? जा..."

संतू के होंठ कांपने लगे, उसने कहा, "खरगोश खरीदने में पैसे कुछ कम पड़ गए थे, तो दादा ने आपके पैसे काम में ले लिये."

पिताजी कुछ देर खामोश रहे, फिर उन्होंने मुझे छोड़ दिया और बोले, "जा, इस बार के लिए माफ करता हूं." खरगोश के बारे में फिर उन्होंने कुछ नहीं कहा.

खरगोश बहुत जल्दी हमारे परिवार में घुलमिल गया. संतू ने चंद रोज के अंदर उस खरगोश को कैसे अपने वश में कर लिया, यह भी ताज्जुब की बात है. खरगोश बड़ा डरपोक जानवर है. आदमी देखते ही दुम दबा कर भागने की कोशिश करता है. हम लोगों का खरगोश घर में किसी की भी पकड़ में नहीं आता था,

लेकिन संतू के दरवा खोल कर पुकारते ही उसके हाथ से खाना छूटता था और उसकी गोद में आ कर बैठ जाता था.

अंत में खरगोश ऐसा पालतू बन गया कि दरवा खुला रहने पर भी छत से बाहर कहीं नहीं जाता था और आदमी देखने पर भी डरता नहीं था. संतू के बुलाने पर नजदीक आता, कमरे में आने को कहा जाता, तो अंदर चला जाता.

पूजा की छुट्टी तक ऐसा ही चलता रहा. करीब करीब हर साल छुट्टी के वक्त हम लोग बाहर जाते हैं. इस बार पिताजी ने तय किया कि हम लोग रांची चलेंगे. खरगोश का क्या किया जाए? इसी के बारे में मैं और संतू सोच में पड़ गए. यहां कलकत्ते में रख कर जाते हैं, तो हमारे घर के जिस नौकर के जिम्मे उसे रखा जाएगा, वह खरगोश की देखभाल कैसी करेगा, कुछ भी पता नहीं था. संतू को यही चिंता लगी रही कि वह लौट कर खरगोश को देख भी पाएगा या नहीं. लेकिन खरगोश ले जाने का जिक्र आते ही पिताजी एकदम बिगड़ खड़े हुए, बोले, "नहीं, यहीं पर हाथ के पास रहेगा. ट्रेन पर जानवर ले जाने का एक पूरा टिकट लगता है, यह भी मालूम है?"

संतू का चेहरा फक पड़ गया. मैं उसे तसल्ली देने लगा, "कुछ सोच मत कर, संतू, एक महीने की छुट्टी देखते ही देखते गुजर जाएगी!"

संतू ने फिर कुछ न कहा.

छुट्टियों में पिताजी हम लोगों को पढ़ाते थे. इसलिए मेरे साथ किताब-कापियों का एक बक्सा और संतू के साथ भी किताब-कापियों का एक बक्सा जाता था. जिस दिन हम रांची चले, संतू अपनी किताबों से भरा सूटकेस हाथ में लटकाए घर से निकला. स्टेशन पर भी उसके हाथ में सूटकेस था. मां ने देख कर कहा, "अरे, तेरा सूटकेस चोरी नहीं जाएगा, दे दे कुली के हाथ में. भारी चीज उठाने से कहीं फिर बुखार न आ जाए!"

संतू ने गर्दन हिला कर कहा, "नहीं!"

इस बार मुझे कुछ शक हुआ. पिताजी जब दूसरे सामान की निगरानी कर रहे थे, तो मैंने संतू से फुसफुसा कर पूछा, "क्या मामला है? सूटकेस में क्या है?"

संतू ने कहा, "उसे ले आया हूं!"

हम लोग ट्रेन में सवार हुए. डिब्बा पहले से ही रिजर्व था. सामान चढ़ा कर पिताजी जरा निश्चिंत हो कर बैठे ही थे कि संतू का सूटकेस खड़खड़ाता हुआ हिला.

मां ने डर कर पैर समेट लिये. पिताजी के उछल कर सूटकेस खोलते ही खरगोश निकल पड़ा. तब पिताजी को सख्त गुस्सा आ गया. मेरी ओर लपक कर मेरे गाल पर उन्होंने एक झापड़ रसीद कर दिया. संतू को वह कभी पीटते नहीं थे, वह बच गया. लेकिन खरगोश के खुले दरवाजे के पास पहुंचते ही उन्होंने उसके एक लात जमा दी और वह छिटक कर प्लेटफार्म पर आ गिरा. पिताजी ने कहा, "चलो, बला टली!"

आंसू पोंछते हुए मैंने खिड़की से देखा—खरगोश भीड़ में बेतहाशा भाग रहा है. आखिर में वह प्लेटफार्म पार कर उधर की ट्रेनों के नीचे गायब हो गया. भाग गया कि ट्रेन के नीचे कट गया, कुछ भी जान न सका.

संतू आंसू रोके मुंह लटकाए बैठा रहा. ट्रेन छूट गई. मां संतू के माथे पर हाथ रख कर बोल पड़ी, "लो, इसे बुखार आ गया. ऐसी भी क्या बात थी, खरगोश आता भी साथ, तो क्या था?"

संतू का बुखार बढ़ता ही चला गया. उसे चादर ओढ़ा कर लिटा दिया गया. मां उसकी तीमारदारी करने लगी. संतू को बुखार इसी तरह आता है. दो-चार घंटे रहता है, सिर पर भीगी पट्टी रखने पर उतर जाता है.

काफी देर हो गई थी. ट्रेन उस वक्त आंधी की रफ्तार से चल रही थी. अचानक संतू लाल लाल आंखें किए हड़बड़ा कर बैठ गया. मां ने उसे दबा कर रखा. लेकिन वह कहने लगा—"जल्दी दरवाजा खोल दो. आया है... आया है... उसे भीतर आने दो!"

मां ने कहा, "चुप हो जाओ, संतू, हम लोग इस समय ट्रेन से रांची जा रहे हैं."

लेकिन संतू ने कुछ न सुना. वह रह रह कर बैठ जाता और वही एक बात दुहराता. अंत में बोला, "खरगोश को तुम लोग अंदर क्यों नहीं आने दे रहे हो? कहीं गिर गया, तो? उस ओर का दरवाजा खोल दो न!"

मैंने पिताजी से कहा, "देख लो न, बाबूजी! दरवाजा खोल कर देख ही लो!" न जाने क्या सोच कर पिताजी उठे. दरवाजा खोलते ही दिखाई पड़ा—सचमुच वह खरगोश पायदान पर सिकुड़ा-सिमटा बैठा है! बुलाते ही अंदर आ गया. संतू का चेहरा हंसी से खिल उठा. आधे घंटे में उसका बुखार भी उतर गया.

जब हम लोग रांची पहुंचे, तो एक और समस्या उठ खड़ी हुई कि अब खरगोश को रखा कहां जाए? सारा मकान ढूंढ़ने पर भी कोई बक्सा तक नहीं मिला, दरवा तो दरकिनार. पिताजी और मां अपनी गिरस्ती संजोने में लगे हुए थे. उन्होंने इस बारे में बिल्कुल माथापच्ची नहीं की. सारी फिक्र मुझे और संतू को थी.

बहुत खोज करने पर एक जगह से कुछ पुरानी जाली मिली. माली की चिरौरी कर के उसे राजी किया. वह बांस काट कर एक दरवा-सा बना देगा. वक्त ज्यादा नहीं था. सो संतू, माली और मैं—तीनों ही जुट गए.

शाम होने वाली ही थी. दरवा भी करीब करीब बन ही चुका था, दरवाजा लगाया जा रहा था और खरगोश मारे खुशी के बाग में फुदकता फिर रहा था. अचानक एक आवाज आई—खरगोश के गले की ही. लेकिन खरगोश कभी इस तरह तो आवाज नहीं करता, यह बड़ी अजीब-सी आवाज थी. पीछे पलट कर देखा—बाड़ के किनारे खरगोश भौचक्का-सा खड़ा है. किस ओर जाएगा,

## चूहेदान—

—नंदलाल

"क्या आप मुझे चूहेदान देंगे?"

"आप पहली बार आए हैं, इसलिए लीजिए; वैसे मैं हट्टे-कट्टे लोगों को दान देने के पक्ष में नहीं हूं!"

---

मानो तय नहीं कर पा रहा है और उसके सामने साक्षात् जमदूत-सा एक बड़ा-सा सियार खड़ा है. सियार इतनी खामोशी से बाग में दाखिल हुआ कि किसी को आहट तक नहीं मिली. हम लोगों को पलट कर खड़े होते देख कर सियार क्षण भर के लिए हिचका. इस मौके का फायदा उठा कर खरगोश बाड़ की दरार से दूसरी ओर भागा. सियार को समझने में देर नहीं लगी और मुंह में आए शिकार को भागते देख कर वह भी लपका. जब तक हम लोग शोर-गुल मचा कर ढेले-पत्थर बटोर रहे थे तब तक शिकार के पीछे शिकारी हवा की रफ्तार से दौड़ पड़ा. हम तीनों दरवा फेंक कर बाग से निकल पड़े.

भागते भागते दिखाई पड़ा—एक पहाड़ के मोड़ पर आ कर दोनों ही जानवर कहीं गायब हो गए. मैं और माली पहाड़ पर चढ़ गए. थोड़ी देर बाद संतू भी हांफते हुए आया. लेकिन खरगोश और सियार किसी का भी कहीं पता न था. जितनी देर हो सका इर्द-गिर्द ढूंढते रहे, पर ढूंढना बेकार रहा. माली ने अंत में कहा, "इस इलाके के सियार बड़े पाजी हैं. जब एक दफे शिकार के पीछे पड़ जाते हैं, तो बिना पकड़े नहीं छोड़ते."

मेरी और संतू की आंखों में आंसू आ गए लेकिन अब कुछ भी नहीं हो सकता था. अंधेरा घिर आने से पहले ही घर लौट आए.

मां ने सब सुन कर संतू के माथे पर हाथ रखा और कहा, "लो, फिर बुखार आ गया है. लेट जाओ, नहीं खरगोश की इल्लत लगा रखी है!"

रात को संतू ने कुछ न खाया. बेहोश-सा पड़ा रहा. मां ने सोचा था, दो-तीन घंटे में बुखार उतर जाएगा. लेकिन ऐसा नहीं हुआ. फिर सब सो गए.

मैं कितनी देर सोया हूंगा, पता नहीं. अचानक कान के पास किसी की दबी आवाज सुनाई पड़ी, "दादा, जल्दी उठ कर आओ."

संतू बुला रहा था. गहरी रात, चारों ओर सन्नाटा! नीद में बाबूजी और मां की सांसें लेने की आवाज आ रही थी.

मैंने फुसफुसा कर पूछा, "क्या हुआ?"

तभी संतू मेरा हाथ पकड़ कर खींचने लगा. उसका हाथ तप रहा था. मैं आंखें मलते उठा. जूतों में पैर डालने वाला था कि उसने मना किया, "नंगे पैर आओ, वरना आवाज होगी!"

दबे पांव बाग के बाहर फाटक के पास तक हम दोनों गए. संतू ने कहा, "अब बाहर चलो."

मैं बोला, "बुखार लिये रात में कहां जाएगा?"

संतू ने कहा, "मुझे सुराग मिल गया है, जल्दी चलो.

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

kissekahani.com

कहानी

# मुनमुन बत्तख की ख़रीदारी

मुनमुन बत्तख अपने अच्छे स्वभाव के लिए सारे जंगल में प्रसिद्ध थी. जब भी वह अपने घर से बाहर निकलती, तो छोटे-बड़े सभी जानवर सिर झुका कर उसको नमस्ते करते.

एक रात जंगल में हल्की हल्की बारिश हुई. सवेरे मौसम बहुत सुहावना देख कर मुनमुन बत्तख ने अपनी डोलची ली और बाजार जाने को निकल पड़ी.

शान से डोलची हिलाते हुए अभी मुनमुन बत्तख थोड़ी ही दूर गई थी कि हिरू चूहा बगल की एक झाड़ी से निकल कर एकदम उसके सामने आ गया और कान हिलाते हुए बोला, "मुनमुन बत्तख, राम राम! यह सुबह सुबह कहां चलीं?"

"बाजार," मुनमुन ने यों ही टालते हुए जवाब दिया.

"क्या लाने?"

"बस यों ही जरा खान-पीने-ओढ़ने की चीजें ले आऊं."

इतना कह कर मुनमुन बत्तख डोलची हिलाते हुए फिर आगे चल दी. अभी हिरू चूहे से मिले थोड़ी ही देर हुई थी कि किटिक गिलहरी अपने कोटर पर से बोली, "मुनमुन बत्तख, गिरियां खाओगी? अभी कल ही लाई हूं."

"बहुत बहुत धन्यवाद! पर देखो मैं बाजार जा रही हूं, फिर कभी आऊंगी." और मुनमुन बत्तख आगे चल पड़ी.

इसी तरह रास्ते में लारू लोमड़ी, चिप्पट खरगोश और टापी मुर्गा मिले. मुनमुन बत्तख सबको जल्दी जल्दी टालती हुई दोपहर होने तक बाजार जा पहुंची.

बाजार क्या था, छोटा-मोटा-सा मेला था. एक झाड़ी में सैनू तोता अपनी रंगबिरंगी टोपियां की दूकान लगाए बैठा था. उधर चूनी गौरैया एक पेड़ के कोटर में बादाम, काजू, किशमिश के ढेर लगाए बैठी थी. टिग्गू कौआ तरह तरह के मंजन लिये पेड़ की छाया में सुस्ता रहा था. एक झरबेरी की डालों पर रंग-बिरंगी कुर्तियां लटकाए चम्मुद्दीन चामू बिल्ला ग्राहक का इंतजार कर रहा था.

मुनमुन बत्तख ने जल्दी जल्दी थोड़े से मेवे और फल, एक मंजन की ट्यूब, दो टोपियां और एक कुर्ती ली और डोलची में सारा सामान भर कर वापस घर को चल दी.

बाजार से बाहर आते ही सड़क पर टापी मुर्गा कलगी हिलाते हुए मिल गया. जैसे ही मुनमुन बत्तख पास आई, वह बड़े विनम्र स्वर में

बोला, "मुनमुन बत्तख, बाजार से बड़ी बड़ी चीजें लाई हो. मैं भी तो देखूं जरा!"

"जरा उधर घास पर चलो, तो दिखाऊं," और मुनमुन बत्तख ने सड़क से थोड़ा हट कर पेड़ के नीचे सारी डोलची उलट दी. टापी मुर्गे ने सारी चीजें उलट-पलट कर देखीं. फिर पीले रंग की एक टोपी उठा कर बोला, "मुन-मुन बहन, यह टोपी तो तुम मुझे दे दो. देखो, मुझे कितनी फब रही है! तुम्हारे पास तो और बहुतसी है."

मुनमुन बत्तख बेचारी सीधे स्वभाव की थी. उसने टापी मुर्गे को पीली टोपी दे दी और बाकी समान डोलची में डाल कर चुपचाप आगे बढ़ गई.

मुनमुन बत्तख फिर थोड़ी दूर ही चली थी कि... एक झाड़ी में से चिप्पट खरगोश बोला, "अरे मुनमुन, रुकना जरा, देखूं तो क्या खरीदारी हुई है!"

मुनमुन बत्तख ने टालने की कोशिश की, पर चिप्पट खरगोश तो आखिर खरगोश ही ठहरा. वह तेजी से उछल कर सामने आ गया और डोलची में झांकने लगा. जैसे ही उसने टोकरी में मुंह डाला, तो उसे मेवों की मजेदार खुशबू आई.

चिप्पट ने तुरंत रोनी सूरत बनाई और बोला, "मुनमुन दीदी, देखती नहीं हो, मैं कितना भूखा हूं! ये मेवे अगर तुम मुझे देती जाओ,

कृष्ण कुमार

तो तुम्हारा क्या बिगड़ेगा? अगले इतवार को एक एक दाना चुका दूंगा."

मुनमुन बत्तख के दिल में थोड़ा लालच आया, पर मना करना तो वह जानती ही नहीं थी. तभी उसे याद आया कि किटिक गिलहरी उसे यों ही गिरियां दे रही थी. इसलिए उसने चिप्पट खरगोश को सारे मेवे दे दिए और डोलची ले कर आगे बढ़ गई.

यह सोच कर कि आगे कोई और न मिल जाए, मुनमुन बत्तख सड़क छोड़ कर पेड़ों के पीछे से चलने लगी. लेकिन लारू लोमड़ी ने तो उसे पहले ही देख लिया था. वह तुरंत सामने आ पहुंची और इसके पहले कि मुनमुन कुछ कहती, लारू बड़ा प्यार जताते हुए बोली, "मुन-मुन बहन, बाजार तो आराम से पहुंच गई थी न? वह टिग्गू कौआ मेरी याद कर रहा होगा?"

"हां, लारू बहन, और वह चामू बिल्ला भी

मन को ललचाने वाली रावलगांव गोलियां तरह-तरह के मजेदार स्वादों में ओरेंज, लेमन, चाकलेट, मिंट। जब कभी, जहां कहीं मन चाहे इनका आनंद लीजिए।

# रावलगाँव

गोलियां, टॉफीयां,
लॅको-बोन-बोन
और पर्ल कैन्डी

रावलगांव
मेरी मनपसंद
गोलियां

PRATIBHA 689H

सोल सेलिंग एजंटस : मेसर्स मोतीलाल गिरधरलाल अघारकर, मालेगाव, जि. नासीक.
बंबई, दिल्ली और उत्तरी भारत के एजेंट : मे. जे. चित्तरंजन ऐन्ड कं. • ३८, मंगलदास रोड, बंबई-२ फोन: ३११०३६
८६४, डॉ. जोशी रोड, करोल बाग, नयी दिल्ली-५ फोन: ५९४०३७.

एक छोटी कहानी

# चुस्ती अफीम मार्का

● अजीज कुरैशी

चीन देश के एक दूरस्थ ग्राम में दो मूर्ख मित्र इकट्ठे रहा करते थे. वे अफीमची भी थे. एक का नाम सुईची और दूसरे का नाम नाम चेंगची था. एक दिन अफीम की तरंग में सुईची ने चेंगची से कहा, "भाई, मन चाहता है कि आज आलू का साग खाएं."

चेंगची बोला, "मन तो मेरा भी यही चाहता है—जो तुम्हारा चाह रहा है, परंतु आलू कहां से लाएं?"

सुईची बोला, "तुम उसकी चिंता मत करो. किसान चौएनची मेरा बहुत गहरा मित्र है, मैं अभी उससे जा कर आलू मांग ले आता हूं. लेकिन एक काम तुम्हें भी करना पड़ेगा, वह यह है कि तुम मेरे आने तक हंडिया साफ करके चूल्हे पर रख दो, उसमें पानी भी भर दो."

चेंगची ने 'बहुत अच्छा' कह कर हंडिया उठा ली और सुईची आलू लेने चल दिया. वह अपने किसान मित्र चौएनची से मिला और उससे अनुमति प्राप्त कर खेत में से आलू निकालने शुरू कर दिए.

अभी थोड़े से ही आलू खोदे होंगे कि नशे की पेंग आ गई और आलू का पत्ता हाथ में ही पकड़ा रह गया.

दूसरे दिन सुबह जब किसान चौएनची खेत में आया, तो देखा कि भाई सुईची अफीम की तरंग में वहीं बैठे हैं.

किसान चौएनची ने सुईची का कंधा पकड़कर जब खूब हिलाया, तब कहीं उसे होश आया. चौएनची ने कहा, "भाई सुईची, तुमने तो प्रतिदिन ही आलू खाने शुरू कर दिए हैं."

अफीमची सुईची क्रोध में भर कर बोला, "कौन मूर्ख अभी तक घर गया है!" किसान चौएनची खूब हंसा और उसे कुछ आलू और खोद दिए. भाई सुईची खुशी खुशी घर की ओर चला, तो घर पर क्या देखता है कि उसका साथी चेंगची अभी हंडिया ही साफ कर रहा था.

सुईची क्रोध से लाल होकर बोला, "मूर्ख मित्र, तुम अभी तक—हंडिया ही साफ कर रहे हो?"

चेंगची ने कहा, "अरे भई, मुझे क्या खबर थी कि तुम रास्ते से ही वापस आ जाओगे!" ●

आबिद मंजिल, हनुमान वार्ड, हिंगनघाट (वर्धा)

---

तुम्हारे हालचाल पूछ रहा था!"

"उसी से लाई हो यह कुर्ती?" लारू लोमड़ी डोलची की तरफ देखते हुए बोली.

"हां, मैंने घर के काम के लिए सस्ती-सी खरीद ली."

"ठीक है, मैं भी तो घर में सस्ती ही पहनती हूं. मैं कल इसके पैसे दे दूंगी. . ." इतना कह कर चालाक लारू ने मुनमुन की डोलची में से लाल रंग की कुर्ती खींच ली.

मुनमुन बड़े असमंजस में थी. वह जानती थी कि लारू से झगड़ा करना बेकार है. इसलिए वह बेचारी अपना-सा मुंह ले कर आगे बढ़ गई. अब उसकी डोलची में सिर्फ एक टोपी बची थी.

किटिक गिलहरी की गिरियां खाने के विचार से मुनमुन उसके घर की तरफ बढ़ी, पर किटिक घर पर नहीं थी. अपना भाग्य कोसती हुई मुनमुन चुपचाप अपने घर की तरफ चलती गई. उसके घर का रास्ता अब थोड़ा ही रह गया था कि किटिक गिलहरी एक झाड़ी में दिखाई पड़ी. उसे देखते ही मुनमुन बोली, "किटिक, लो अब मैं वापस आ गई. तुम्हारी गिरियां कहां हैं?"

"कल घर पर आना, भई, उस वक्त मैंने तुम्हें बुलाया पर तुम रुकीं ही नहीं. पर अपनी यह सुंदर टोपी तो दिखाओ!"

अब मुनमुन बत्तख का दिल बुझ गया. उसने सोचा कि टोपी का लोभ छोड़ कर क्यों न किटिक गिलहरी पर अहसान थोपा जाए. बोली, "अरे किटिक बहन, यह तो मैं तुम्हारे ही लिए लेती आई. मेरे लिए तो बाजार में कुछ था ही नहीं! शुक्र है, तुम्हें पसंद तो आई!"

इतना कह कर बिना धन्यवाद का इंतजार किए मुनमुन बत्तख खाली डोलची हिलाते हुए अपने घर की तरफ जल्दी जल्दी चलने लगी. वह दरवाजे में घुस ही रही थी कि एक तरफ से हिरू चूहे की आवाज आई—"क्यों, मुनमुन बत्तख, क्या खरीदारी हुई बाजार में?"

"अरे हिरू भाई, मैं तो पैसे ले जाना ही भूल गई थी!" और मुनमुन बत्तख ने दरवाजा बंद कर चटपट भीतर से कुंडी लगा दी. ●

द्वारा श्री विष्णु मित्र एडवोकेट,
बड़ा पुल, टीकमगढ़ (म. प्र.)

तीनों हांफ भी रहे थे और कांप भी रहे थे. शायद डर गए थे. शायद क्या, सचमुच ही डर गए थे. आखिर दुनाली बंदूक की अचूक मार से कौन भाई का लाल नहीं डर जाता! बड़े से बड़े रणबांकुरे जबर बबर के छक्के छूटने लगते हैं! इसके सामने शेर गीदड़ बन जाते हैं, गीदड़ कुत्ते की तरह दुम दबा कर भाग खड़े होते हैं. कुत्ते भीगी बिल्ली बन जाते हैं और बिल्ली चूहे की तरह भाग कर बिल तलाश करने लगती है! मतलब यह कि तीनों भ्राता अभी अभी जान हथेली पर रख कर भाग कर आए थे, तब कहीं जान बचा पाए. वह तो भला हुआ, किस्मत से आसपास घने झाड़-झंकाड़ थे जो दौड़ कर दुबक गए, वरना तीनों की लाशें पड़ी होतीं उसी पेड़ के नीचे, या फिर, किसी सरकस के दड़बे में बंद वे कसरत के दांव-पेंच सीख रहे होते. जाने कब से पेड़ पर चढ़ा बैठा था कम्बख्त!

और बच्चे तो आखिर बच्चे हैं! भोले-भाले मासूम टहलते हुए चले जा रहे थे चुपचाप. ऐन मौके पर बगैर आहट किए धीरे धीरे वह नजदीक आ पहुंचा. किया क्या जाए इस बेरहम कसाई का! अपने साथी से कह रहा था—"जैक्सन, आओ, तीनों है. सरकस वालों से अच्छी रकम हासिल होगी!" हालांकि यह बात उसने अपने दूसरे छिपे हुए शिकारी साथी से बहुत धीरे से फुसफुसा कर कही थी, मगर वह नीली छतरी वाले की मेहरबानी कि बेबी के कानों ने सुन लिया, पप्पू की नाक ने सूंघ लिया और डौली की नजरों ने चौंक कर एक बार इनकी ओर देखा और फिर सिर पर पांव रख कर शेरनी की तीनों संतानें झाड़-झंकाड़ में ऐसी गायब हुईं, जैसे गधे के सिर से सींग!

बेबी, पप्पू और डौली की शेरनी मम्मी के साथ भी ऐसा ही घटना घटी थी. खुराफात सारी इन्हीं शिकारी महोदय की थी. जाने किस सिरफिरे ने इन्हें इस जंगल का रास्ता दिखा दिया! बस, तभी से अपनी दुनाली हाथ में लिये छाती चौड़ी करके भटकते फिरते हैं जंगल जंगल. अब अगर कोई पूछे कि भले आदमी तुम्हारे दिमाग का कौनसा पेंच ढीला है, जो यों जब-तब बंदूक की गोली का आतंक सारे जंगल में फैलाते फिरते हो! किस गुरु ने शिक्षा दी थी कि निहत्थों पर गोली मारो और अपनी वीरता की शान बघारो! कर दिया न तीनों को अनाथ! अब जंगल में तो कोई अनाथालय भी नहीं

कहानी

# शिकार और शिकारी

होता, जहां जा कर भरती हो जाएं और जिंदगी का सिलसिला जोड़ें!

पहले-पहल जब शेरनी मम्मी से सामना हुआ, तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी बच्चूराम की! और शेरनी मम्मी को क्या पता था कि आप मचान पर विराजमान हैं, वरना हम तो पेड़ के नीचे कब से आराम कर रहे थे. अचानक आपका टोप लुढ़कता हुआ मम्मी के पांवों में आ गिरा, तो पता चला कि आप हैं! मम्मी चौंक कर खड़ी हो गई थी. उसने आपकी बदबू सूंघ ली और फुरती से नजर उठा कर जो ऊपर देखा, तो आपकी बंदूक भी नीचे लुढ़क आई थी!

मगर उस दिन धोखे से गोली चला दी बदजात ने! बच्चों की मम्मी गर्राकर एक ओर को हो गई. बाल बाल बची. तभी दूसरी गोली दूसरी ओर से आई. यह था महाशय जी का शिकारी दोस्त जैक्सन. कम्बख्त ने मम्मी की टांग घायल कर दी. मम्मी जो दहाड़ी तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई दोनों की. जरा कोई पूछे तो, भले आदमियो, एक से दो-दो लड़ते हैं कहीं! और धोखे से वार! वह भी पेड़ पर चढ़ कर! मम्मी को क्रोध तो बहुत आया, मगर दहाड़ कर रह गई; बच्चों की रक्षा जो करनी थी. इसलिए एक ओर को उन्हें झाड़ी में दुबका कर निकाल ले गई शिकारियों की नजरों से दूर.

शिकारियों की इसी धोखा-धड़ी से वार करने की आदत के कारण शेर बच्चों की मम्मी को पूरे मनुष्य समाज से घृणा हो गई थी. उसने प्रण कर लिया था कि अब जहां भी उसे मनुष्य नजर आएगा, उसे फाड़ कर खा जाएगी. और हुआ भी यही. अब मम्मी जब-तब मीलों दूर गांवों में चली जाती और एकाध आदमी पर हाथ साफ करके लौट आती. अपने लंगड़ाते पांव को देख देख कर उसे क्रोध चढ़ आता और उसके कदम आदमी नामक धोखेबाज प्राणी की तलाश में चल पड़ते.

मगर उस दिन मम्मी सब ओर से निश्चिंत हरे-भरे वन-प्रदेश में सैर कराने ले जा रही थी तीनों बच्चों को. क्या गजब का रौब था बच्चों की मम्मी का भी. चलती थी, तो चारों ओर मुआयना करती हुई. और जानवर तो जानवर, कोई पत्ता भी कहीं खड़कता होता तो सहम कर चुप हो जाता. शाम का झुटपुटा था. और शेरनी मम्मी तीनों बच्चों को साथ लिये चली जा रही थी खामोशी से.

सहसा, शेरनी मम्मी किसी चीज की गंध पा कर चौंकी. उसको यकीन हो गया कि आस-पास ही कहीं उसका सबसे खतरनाक जानी दुश्मन विद्यमान है. उसने एक नजर अपने बच्चों पर डाली. फिर तीनों को नजदीक ही एक झाड़ की ओट में ले गई और उन्हें वहीं छोड़ कर छलांग लगाती हुई बढ़ गई पेड़ों के झुरमुट की ओर. मगर पीछे पीछे तीनों बच्चे भी झाड़ में से निकल कर धीरे धीरे उस ओर आगे बढ़े.

कुछ ही दूरी पर झाड़ी में छिपी नजर आई शेरनी मम्मी. बच्चे वहीं नजदीक की झाड़ी में छिप कर मम्मी की हरकतों का अवलोकन करने लगे. उन्होंने देखा, मम्मी झाड़ियों के पार पेड़ पर बैठे दो मनुष्यों पर निशाना साध रही है. उसकी आंखें उत्तरोत्तर क्रोध के कारण लाल होती जा रही हैं. वहां दो मचान आमने-सामने बंधे हैं. एक पर बैठा है वही शिकारी, दूसरे पर उसका साथी जैक्सन.

धीरे धीरे शाम ढल गई. शेरनी मम्मी वहीं घात में छिपी बैठी रही. दूरी से उन मनुष्यों को देख देख कर मम्मी के मुंह में बार बार पानी भर आता. परंतु वह भली प्रकार जानती थी कि दोनों ओर से दुनालियां तनी हुई हैं, बीच में बंधा है एक कटरा, जो हर रह कर रंभा उठता है. रंभाते कटरे को देख कर शेर के बच्चों के मुंह में भी पानी भर आया. मगर वे वहीं छिपे रहे.

जब काफी देर हो गई और अंधेरा चांदनी में घुल-मिल कर एक हो गया, तो शेरनी मम्मी लंगड़ाती हुई दबे पांव आगे बढ़ी और झाड़ियों में दुबकती हुई छिपती-छिपाती जा पहुंची जैक्सन की मचान के ठीक नीचे. और फिर धीरे से उसने पंजे ऊपर उठाए और आदमी की तरह खड़ी हो कर झूल गई मचान पर. जो मारा पापड़ वाले को! बंध गई घिग्गी जैक्सन की. नजर तक मिलाते न बने. उधर शिकारी साथी इस ओर से बेखबर. जैक्सन के मुंह से आवाज भी न निकली. शेरनी मचान को अगले

वीरकुमार अधीर

kissekahani.com

पांवों से पकड़े लटकी हुई थी. आखिर, जैक्सन ने उसके मुंह की ओर दुनाली कर दी. लो, शेरनी मम्मी ने बंदूक की नाल को ही दांतों से चबा डाला. अब जैक्सन महोदय जोर लगा रहे हैं बंदूक के घोड़े पर, मगर उनका दुर्भाग्य कि कारतूस भी ऐन इसी मौके पर खराब निकलने थे. गोली छूटने का नाम ही न ले रही थी. झाड़ी में छिपे बच्चों ने मम्मी का यह वीरतापूर्ण कारनामा देखा, तो खुशी के मारे जोरों से 'हिप हिप हुर्रा' का नारा लगाया.

आखिर असहाय जैक्सन के मुंह से एक भयपूर्ण चीख निकल ही गई. अब कहीं चौंके दूसरी मचान पर बैठे साथी शिकारी महोदय. देखा तो देखते ही रह गए. जैसे-तैसे करके बंदूक संभाली और निशाना साधा शेरनी मम्मी पर. मगर अजीब अंदेशा है कि गोली चलाते हुए हाथ यह सोच कर थरथरा रहे हैं कि निशाना जरा भी चूका, तो गोली लगेगी जैक्सन को. शेरनी मम्मी और जैक्सन कुछ इसी प्रकार उनके निशाने की सोच में पड़ रहे थे.

लेकिन मरता क्या न करता. उसने अपने साथी जैक्सन को बचाने के लिए मम्मी के पीछे पीछे से गोली दाग ही दी उसके मस्तक पर. एक जोरदार धायं-धायं की आवाज हुई और दो गोलियां एक साथ शेरनी मम्मी के सिर को बेध गईं. फिर शेरनी मम्मी की जंगल को दहला देने वाली गर्जना सुनाई पड़ी और वह मचान सहित, जिस पर जैक्सन महोदय विराजमान थे, आ गिरी जमीन पर. तो भी मम्मी ने लुढ़कते जैक्सन पर छलांग लगा दी. यद्यपि दो गोलियां उसके भेजे में घुस गई थीं और उससे खून के फौवारे छूटे रहे थे, फिर भी मम्मी दहाड़ते हुए अपने शत्रु पर टूट पड़ी और उसकी भुजा चबा डाली.

मगर तब तक शिकारी शायद अपनी बंदूक फिर भर चुका था और दनादन दो गोलियां और शेरनी मम्मी के शरीर में जा घुसीं.

झाड़ी में बैठे बच्चे दुखित हो उठे और शोक में डूबे दर्दभरी आंखों से शेरनी मम्मी के निर्जीव होते शरीर की ओर देखने लगे. उनकी पलकें भीग गईं. मगर फिर भी अपनी मम्मी की वीरता देख कर उनकी छाती गर्व से फूल उठी.

शेरनी की तीनों अनाथ संतानें चुपचाप झाड़ियों में छिपती हुई वापस लौट गईं.

●

अगले दिन तीनों बच्चे काफी सोच-विचार करने के पश्चात् पहुंचे गैंडे महाराज की सेवा में और अपनी अर्ज पेश की—"ऐ गैंडे महाराज, तुम्हारी खाल पर तलवार का तो वार क्या, बंदूक की गोली भी एक बारगी असर न करे, देखो, आदमी नामक दो खतरनाक जानवर जंगल में आए हुए हैं. उन्होंने हमारी शेरनी मम्मी की हत्या कर डाली है. उनसे बदला लेने और उन्हें इस क्षेत्र से मार भगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य आप जैसे वीर ही कर सकते हैं. इसलिए कमर कस कर तैयार हो जाओ रण में चलने के लिए. . ." इतना कह कर तीनों बच्चों ने वीरगति को प्राप्त माता की वीरता का बखान किया और उसकी स्मृति में आंखों से आंसू ढुलकाए.

लेकिन गैंडे महोदय ने जो पूरी गाथा सुनी, तो मुंह फेर कर बोले, "बच्चो, तुम अभी बच्चे हो, अक्ल के कच्चे हो! मनुष्य की दुनाली का मुकाबला करने का मतलब है अपनी जान को प्लेट में रख कर यमराज को दावत पर बुलाना. इस लिए हे प्यारे सिंह-पुत्रो, अपनी शेरनी मम्मी की याद भुला कर अपनी जून सुधारने की कोशिश करो."

उत्तर सुन कर शेरनी के तीनों बच्चे अत्यंत निराश हुए और अपना-सा मुंह ले कर लौट गए. चलते चलते नजर आ गए हाथी राजा. भारी भरकम शरीर, एक एक पांव पेड़ के तने की तरह मोटा-लंबा, उस पर जिस्म कि जैसे पहाड़ हरकत कर रहा हो. देख कर पप्पू के दिमाग में आया कि हाथी राजा से निवेदन करें शिकारी का शिकार करने के लिए, कि अपने शरीर रूपी मचान पर थिरकती सूंड रूपी दुनाली की करामात दिखाएं.

मगर जब हाथी राजा ने शिकारियों की बाबत सुना, तो जैसे उन्हें भी सांप सूंघ गया. पंखे की तरह हिलते हुए कान हिलने बंद हो गए और डर के मारे कंपकंपी छूटने लगी. हाथी राजा बोले, "बच्चो, मूर्खता की बात मत सोचो. शिकारी के सामने भूल कर भी मत जाना. मनुष्य

## भोलू भाई की भूलभुलैया नं० १० सही हल और परिणाम

घड़ी के १२ टुकड़ों में से जिस टुकड़े पर १ लिखा है उसके दाहिनी ओर के कटावों से अन्य किसी टुकड़े के बायीं ओर का कटाव मिलाओ. वह टुकड़ा उसके ठीक नीचे दायीं तरफ है. इसे २ मान लो. अब उसी तरह इसके साथ तीसरे टुकड़े का मिलान करो, और करते चले जाओ. जब सब घंटे मिल जाएंगे, तो तुम देखोगे छोटी सूई का संकेत ८ की तरफ है और बड़ी सूई १२ बजने में ४ मिनिट बता रही है. इसलिए जिस समय घड़ी के टुकड़े हुए थे, उस समय ७.५६ मिनिट हुए थे. पकड़ा हुआ आदमी उस समय वहां से बहुत दूर था. इसलिए वह निर्दोष निकला.

**'पराग' के पाठक बहुत चतुर हो गए हैं. सही उत्तर ११०० से ऊपर की संख्या में आए. चतुर-सुजान पाठक समझ सकते हैं कि इतने सारे विजेताओं के नामों के साथ अपना नाम छपवाना बिल्कुल बेकार है. आदमी वह जो लाखों में एक निकले, कम से कम हजारों में तो हो ही—हजारों में हजारवां होने का चाव हमारे पाठकों को नहीं होगा, यह विश्वास कर के इस बार हम विजेताओं की सूची नहीं छाप रहे हैं.**

हुप, हुप!" इस बार लंगूर की आवाज इतनी तेज थी कि निन्नी को अपने कानों पर हाथ रख लेने पड़े.

निन्नी भी दूसरी बार बोली, "हुप!"

कप्पू के पिताजी ने रोकते हुए कहा, "देखो, भई, ज्यादा शैतानी नहीं. एक-दो बार ही अच्छा रहता है. इस की हुप-हुप सुनने वाले हम अकेले तो हैं नहीं. सारा दिन लोग आते रहते हैं. इसे तंग करते हैं. अगर हम भी तंग करेंगे, तो लंगूर क्या सोचेगा?"

लंगूर पर आखिरी निगाह डाल कर सब आगे चल दिए.

सारा चिड़ियाघर देखा जा चुका, तो बच्चों ने कहा कि हम फिर से गन्ने का रस पिएंगे. उन की बात मान ली गई. गन्ने का रस पीने के बाद सब आराम से बैठ कर बातें करते रहे. घर जाने की विशेष जल्दी नहीं थी, क्योंकि घर मिर्जा इस्माइल रोड पर था और यह रोड नजदीक ही थी.

"हुप, हुप, हुप, हुप, हुप!" लंगूर चीखने लगा, दूर से उस की आवाज ने सारे वातावरण को कंपा दिया. चाचा बोले, "लोग लंगूर को छेड़ रहे हैं."

निन्नी मचलने लगी," पिताजी, हम भी छेड़ेंगे... चलिए न, हम भी छेड़ेंगे!"

"आओ, चलो," और चाचा उठ खड़े हुए. निन्नी उठी, तो बबलू और मुन्ना भी उठे. मजे की बात यह कि चाची से भी न रहा गया. "हम अभी आते हैं"—कह कर वे सब फिर से चिड़ियाघर में घुस गए.

कप्पू, उस की मां और पिताजी वहीं घास पर लेटे रहे. चाचा-चाची और उनके तीनों बच्चों के जाते ही कप्पू को फिर अपने माउथ आर्गन की याद आ गई. अभी यह बात पिताजी को नहीं मालूम. कप्पू का बार बार मन होने लगा कि बता दे, मगर उसने अपना मुंह बंद रखा.

"हुप, हुप, हुप, हुप, हुप, हुप, हुप!" लंगूर की चीखें सुनाई देने लगीं. चीखों का सिलसिला बंद होता न होता कि फिर से जारी हो जाता. कप्पू की मां से न रहा गया. बोली, "इतनी छेड़खानी अच्छी नहीं."

तब कप्पू के पिताजी भी कहने से न रह सके, "ज्यादा छेड़ेंगे, तो चिड़ियाघर का चौकीदार सब को वहां से भगा देगा. क्या इज्जत रहेगी उनकी?"

कप्पू बोल पड़ा. "मां, चाचा-चाची मुझे अच्छे नहीं लगते."

"ऐसा नहीं कहते, बेटे."

"जयपुर से जाने के बाद वह बहुत बदल गए हैं. मुझे याद है, पहले वह ऐसे नहीं थे. चाची भी ऐसी नहीं थीं. निन्नी, बबलू, मुन्ना—सब बदल गए हैं!" कप्पू बोला. उस की निगाह मां की आंखों में ठहर गई. मां की आंखों के भाव कप्पू ने पहचान लिए. वे आंखें कप्पू से कह रही थीं कि माउथ आर्गन की चोरी की बात पिताजी के सामने मत कह बैठना.

"हुप, हुप, हुप,"—लंगूर चीखे जा रहा था...

"मां...निन्नी और बबलू ने मिल कर खोटा सिक्का चलाया था. मुन्ना ने..." और कप्पू ने फिर इन शब्दों को होंठों पर आने से रोक लिया कि मुन्ना ने चोरी की...

"कप्पू बेटे..." मां कह रही थी, "यह दुनिया बहुत बड़ी है न?"

"हां."

"और इस दुनिया में काफी लोग ऐसे हैं जो अच्छे नहीं हैं—है न?"

"हां, मां."

"क्या हम अकेले ही इतनी बड़ी दुनिया को सुधार सकते हैं?"

इस प्रश्न के जवाब में वह न हां कह सका, न ना. मां ने कप्पू को प्यार से अपने नजदीक खींचा और बोली, "महात्मा गांधी या भगवान् बुद्ध जैसे महापुरुष भी सारी दुनिया को नहीं सुधार सके—हम तो बड़े मामूली लोग हैं. लेकिन गांधी या बुद्ध या किसी भी महापुरुष की जीवनी को ध्यान से पढ़ो. तुम देखोगे कि सभी महान लोगों ने दुनिया को सुधारने से पहले खुद अपने आप को सुधारा. जरा सोचो, कप्पू...अगर हर आदमी दूसरों को सुधारने से पहले अपने आपको सुधारने का जिम्मा ले ले तो...क्या रातोंरात यह सारी दुनिया अच्छी न हो जाएगी?"

कप्पू मां की ओर देखता रह गया. मां का एक एक शब्द उसके कानों में गूंज रहा था.

थोड़ी ही देर में चाचा-चाची और तीनों बच्चे वापस आ गए. उन्होंने बिना किसी खेद के, हंसते हुए बताया कि लंगूर को वे तब तक छेड़ते रहे, जब तक चौकीदार ने आ कर उन्हें भगा न दिया...

●

"मां, देखो, इस डिबिया में क्या है!" कप्पू ने घर आते ही मां के हाथों में वह नन्ही-सी डिबिया रख दी. मां ने डिबिया खोली तो देखा, भीतर अनेक डाक टिकट हैं. किसी भी टिकट पर मुहर नहीं लगी है, मगर सभी टिकट ऐसे हैं, मानो पहले कहीं चिपके हुए थे और बाद में भिगो कर उतार लिये गए.

"अरे, कप्पू! तुम ने कब जमा किया इन्हें?" मां अचरज से बोली.

"मैं इन्हें ढाई साल से जमा कर रहा हूं, मां, लेकिन आज जला देना चाहता हूं. तुम इन्हें चूल्हे में डाल दो."

"क्यों?" मां ने सब समझते हुए भी पूछा.

"क्योंकि ये टिकट एक बार इस्तेमाल हो चुके हैं. मैं चाहूं तो इन्हें फिर से इस्तेमाल कर सकता हूं, पैसे बचा सकता हूं...लेकिन इन्हें दोबारा इस्तेमाल करना कुछ कुछ वैसी ही बात है, जैसे...खोटा सिक्का चलाना या...माउथ आर्गन की चोरी करना!" कप्पू ने कहा. उस की आंखें चमक रही थीं.

और मां की आंखें भी चमक रही थीं. उसने कप्पू को भींच कर बार बार चूमा. कभी कभी घर में बुरे लोगों के आते ही अच्छी बातें कैसे जगमग करने लगती हैं! नहीं क्या? ●

के–१०३ कीर्ति नगर, नई दिल्ली–१५.

किसी नगर में एक आदमी रहता था. नाम था सितारा. पर उसकी किस्मत का सितारा सोया हुआ था. वह जवान, तगड़ा और खूब हृष्ट-पुष्ट था. मेहनत कर सकता था. करता था; पर अच्छा फल न मिलने पर जल्दी ही हार कर बैठ जाता था. निराश हो कर सोचा करता. दिनों और महीनों ऐसे ही सोचता रहता. फिर बुझे मन से किसी काम में हाथ डालता था, तो फिर वैसा ही होता. काम असफल हो जाता और वह निराश हो कर फिर वैसे ही सोचने लगता.

एक दिन सोते सोते उसने एक सपना देखा. देखा उस की किस्मत का सितारा एक पेड़ की टहनी पर चमक रहा है. उसने लपक कर उसे पकड़ना चाहा, पर पकड़ न सका. जैसे जैसे वह उसके पीछे भागता, वैसे वैसे वह और दूर खिसकता मालूम होता. फिर एक जगह जा कर वह रुक गया. आगे समुद्र पड़ता था और सितारे वाला पेड़ दूर कहीं उसके पार दिखाई दे रहा था. वह बुरी तरह थक कर झुंझला उठा—'अब क्या हो सकता है, लौट चलूं!' तभी उसे कहीं दूर से, एक आवाज आई—'हिम्मत मत हारो, बढ़े चलो. तुम्हारी किस्मत का सितारा सात समुंदर पार मिलेगा.' शायद सितारा ही बोल रहा था. हड़बड़ा कर उसने आंखें मलीं कि देखूं आवाज किधर से आ रही है. पर आवाज खो गई. सितारा बुझ गया. वह जाग उठा था.

उसने अपने सपने वाली बात अपने मित्रों को कह सुनाई. एक मित्र बड़ा समझदार था. उसने कहा, "ठीक तो है, किस्मत का सितारा यहां बैठे रहने से नहीं मिलेगा. उसके लिए चलते जाओ, आगे बढ़ते जाओ; सात समुंदर पार जाना पड़े, तो भी जाओ. कहीं तो मिलेगा ही!"

"पर कैसे मिलेगा?" उसने घबरा कर पूछा.

मित्र ने जवाब दिया, "यह तो मैं नहीं जानता कि कैसे मिलेगा, कहां मिलेगा, पर यह जरूर जानता हूं कि घर में बैठे रहने से नहीं मिलेगा. तुम सितारा हो कर भी यह बात नहीं समझते?"

बात सितारा को लग गई. वह सोचने लगा—'मेरा नाम सितारा है, मैं जवान हूं, तगड़ा हूं. मैं मेहनत कर सकता हूं. मीलों चल सकता हूं. फिर भला किस्मत का सितारा क्यों न मिलेगा. जरूर मिलेगा. मैं उसे पा कर ही दम लूंगा.' और वह चल पड़ा.

चलते चलते थक कर जब वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा, तो देखा, पेड़ का आधा हिस्सा हरा है, आधा सूखा. वह हैरान हो कर सोचने लगा—'पता नहीं क्या माजरा है? अगर किस्मत का सितारा मिल गया, तो उससे मैं यह बात जरूर पूछूंगा.' और वह आगे बढ़ गया.

कहानी

# किस्मत का सितारा

फिर चलते चलते एक अजनबी शहर में पहुंचा, तो वहां ढिंढोरची ढिंढोरा पीट रहा था, "जो कोई राजकुमारी को हंसा देगा, राजा उसे मुंह मांगा इनाम देगा!" ढिंढोरा सुन कर वह फिर हैरान हो सोचने लगा—'यह राजकुमारी इतनी गमगीन क्यों है कि कभी हंसती ही नहीं? अगर किस्मत का सितारा मिल गया, तो मैं उससे यह बात भी जरूर पूछूंगा.' और वह उस शहर में बिना रुके आगे बढ़ गया.

रास्ते में मेहनत-मजदूरी से पेट भरता वह चलता गया, बढ़ता गया और इसी तरह चलते चलते एक दिन समुद्र के किनारे पहुंच गया. अब समस्या आई कि पार कैसे जाए? पर अब उसमें हिम्मत आ चुकी थी. उसने निराश हो कर सोचना छोड़ दिया था. वह किनारे बैठ कर तरकीब सोचने लगा. तभी उसे एक भार-भरकम मगरमच्छ दिखाई दिया. जब मगरमच्छ ने पानी से सिर निकाल कर अपना बड़ा-सा मुंह खोला, तो वह डर कर पीछे हट गया—'हाय राम, यह तो निगल ही जाएगा!' पर फिर उसे एकाएक हंसी आ गई. मगरमच्छ ने मुंह दूसरी ओर फेरा कि उसकी बड़ी-सी तख्ते जैसी पीठ दिखाई दे गई. इसे ही देख कर वह हंस पड़ा था. बस उसने आव देखा न ताव, उछल कर उस तख्ते-सी पीठ पर सवार हो गया. अब डरने की बारी मगरमच्छ की थी. वह उसे ले कर पानी में सरकने लगा और धीरे धीरे तैर कर उस पार पहुंचा आया.

पार उतर कर उसे ख्याल आया—'इस मगरमच्छ ने मुझे खाया क्यों नहीं? अगर किस्मत का सितारा मिल गया, तो मैं उससे यह बात भी जरूर पूछूंगा.' और इस बार वह आगे चलने को हुआ, तो देखा कि सामने पेड़ की टहनी पर वही सितारा चमक रहा था. उसकी आंखें चौंधिया गईं. सितारा ने किस्मत का सितारा पा लिया था, पर अभी उसे अपने प्रश्नों का उत्तर पाना था.

उसने बैठ कर सोचा—'यह सितारा इतनी दूर ही क्यों मिला?'

किस्मत का सितारा चमका और उसे जवाब मिला, "इसलिए कि खूब कड़ी मेहनत और अनुभव से ही वह मिलता है!"

"और मगरमच्छ ने मुझे अपना भोजन क्यों नहीं बनाया?'

किस्मत का सितारा फिर चमका, "इसलिए कि सच्ची लगन में डूबे हुए व्यक्ति का दुश्मन भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता!"

"और राजकुमारी हंसती क्यों नहीं?"

सितारा फिर चमका और आवाज आई, "उसे कोई अजूबा चीज दिखाओ!"

"और वह पेड़...?"

सितारा चमका और हंसी की रोशनी फैल गई, "यह भी कोई पूछने की बात है, खोद कर देख लो!"

आशारानी व्होरा

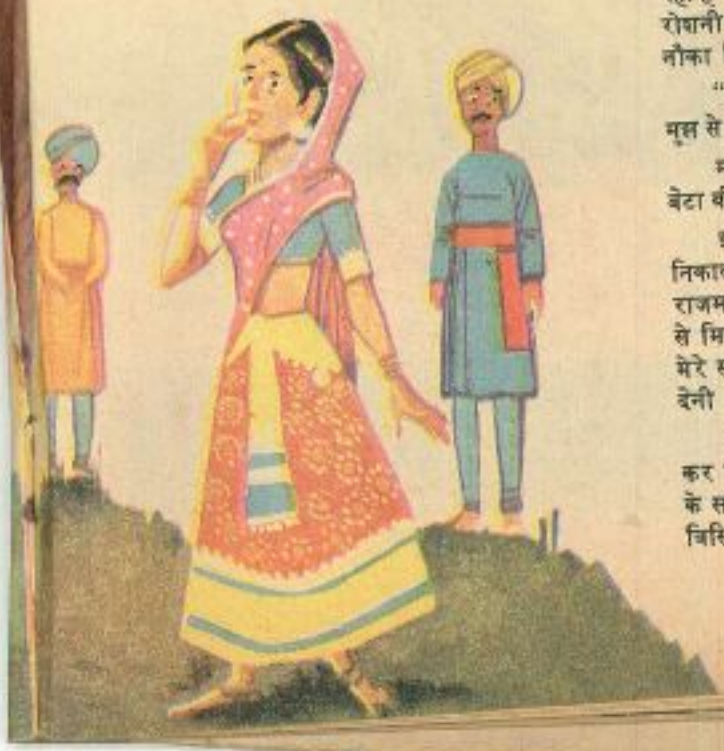

इस से आगे उस की यह पूछने की हिम्मत नहीं हुई कि अब वह वापस पार कैसे जाएगा. वह लौट पड़ा. उसे लगा वह सितारा भी उस के साथ साथ चलता आ रहा है. पेड़ और सितारा पीछे छूट गए थे. पर सितारे की रोशनी साथ साथ चल रही थी. किनारे पर आते ही एक नौका दिखाई दी. मल्लाह ने पुकारा, "चलना है, भाई!"

"हां, लेकिन मेरे पास पैसे नहीं हैं, चाहो तो बदले में मुझ से कुछ काम करा लो."

मल्लाह को बात जंच गई. बोला, "नाव में मेरा बेटा बीमार है. उसकी देखभाल करो, मैं नाव चलाता हूं."

इस तरह हर जगह अपनी सूझ और मेहनत से काम निकालता वह वापस लौट आया. लौटते समय पहले उस राजमहल में पहुंचा और राजा से बोला, "मैं राजकुमारी से मिल कर उसे हंसाना चाहता हूं, पर आपको उसे मेरे साथ कुछ समय के लिए बाहर जाने की इजाजत देनी होगी."

राजा सहमत हो गया. उसने तुरंत दो दूतों को साथ कर राजकुमारी को सितारा के साथ भेज दिया. सितारा के साथ चलती एक रोशनी को देख कर राजकुमारी विस्मित हुई, पर हंसी नहीं. फिर जब वे लोग उस पेड़

kissekahani.com

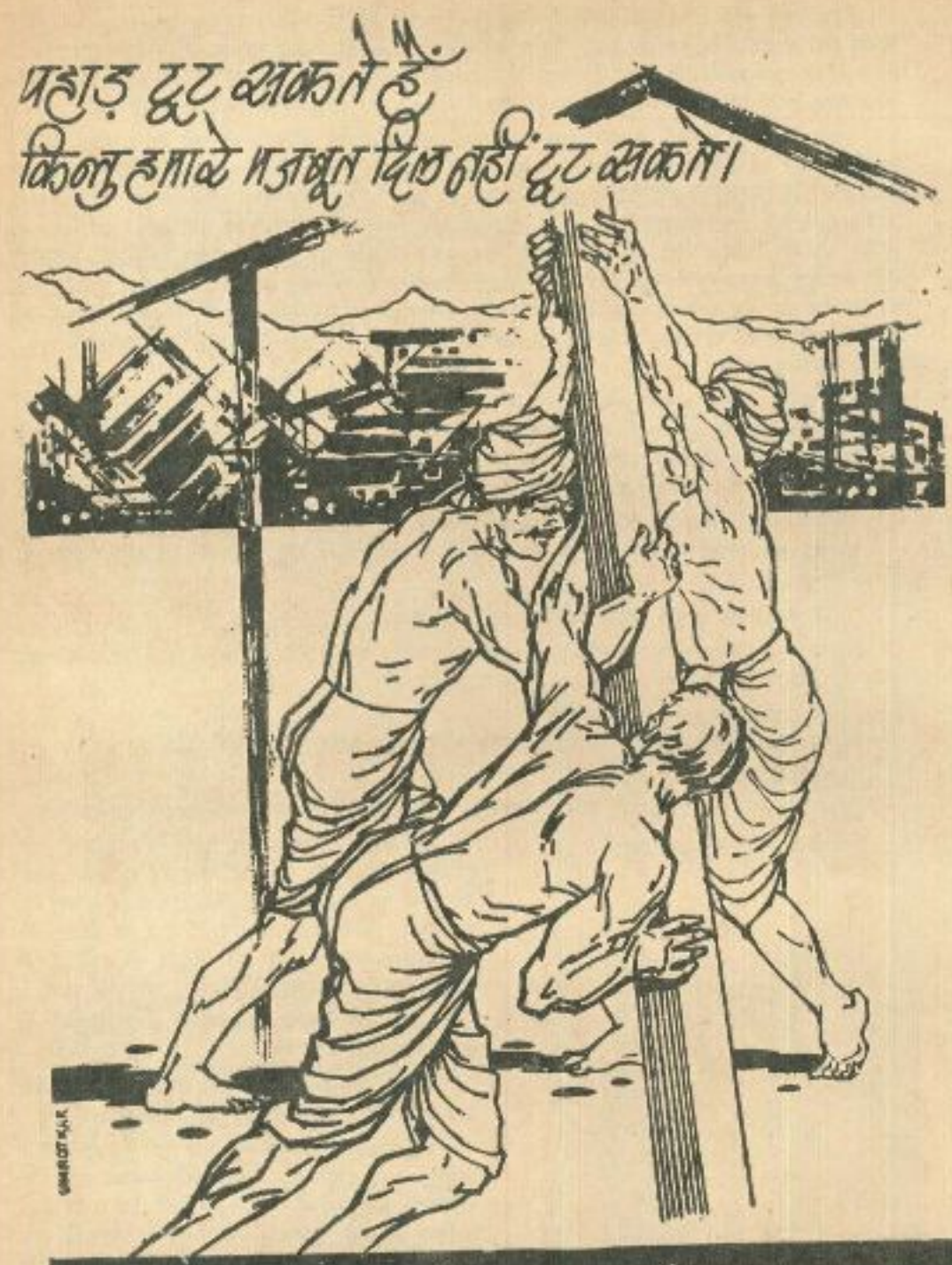


**एक होकर हम महान संकट का सामना करें।**

प्रकाशन संचालक, महाराष्ट्र शासन, बम्बई

# खबरदार!

भारत के किशोर-साहित्य में पहली बार!
किशोर-किशोरियों के अपने 'जेम्स बांड' का पदार्पण!
एक पूरा 'जेम्स बांड' नहीं—उसके दो चपल अद्धे!

## डबल सीक्रेट एजेंट 00½

जिजुत्सु, जूडो, कराते, सवात, बिस्कोट, बबनसे
और अन्य आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों, गुप्त जासूसी यंत्रों व कौशल से लैस तथा द्वंद्व-युद्ध में पारंगत दो
दुर्द्धर्ष छोकरों के साहसपूर्ण, खतरनाक कारनामे!

राम और श्याम नामक डबल सीक्रेट एजेंटों के इन हौलनाक तथा देशभक्तिपूर्ण कारनामों को पढ़ कर
भारत के किशोर-किशोरियों को सस्ते जासूसी उपन्यास फीके लगने लगेंगे!

हिंदी में मौलिक थ्रिलर उपन्यासों के सर्वप्रथम लेखक
'चंदर' का नवीनतम किशोर-स्पाई थ्रिलर—
'पराग' के लिए विशेष रूप से लिखित
**जनवरी '६९ के अंक से धारावाही प्रकाशन**

अपनी प्रति पूरे वर्ष के लिए अभी से रिजर्व करा लो—
वरना मांग मांग कर पछनी पड़ेगी!

**साथ में मजे ले ले कर पढ़ो**
**जनवरी १९६९ के अंक की ७ सरस कहानियां —**

- बाले मियां : शिवानी
- किस्सा तोता-मैना : हरिकृष्ण देवसरे
- पश्चाताप : राजेंद्रकुमार मेहरोत्रा
- अमरीका की खोज : अवतारसिंह
- भूत-बिवाई : मस्तराम कपूर उर्मिल
- दो सहेलियां : देवेश ठाकुर
- हवा कहे, सूरज करे : मदनमोहन मदारिया


के पास पहुंचे, तो आधा पेड़ हरा और आधा सूखा देख कर उसे हंसी आ गई. हंसते हुए वह बोली, "तुम तो कोई जादूगर मालूम पड़ते हो. यह क्या चमत्कार है?"

सितारा बोला, "चमत्कार? चमत्कार तो अभी देखना है!" और उसने पेड़ की जड़ खोदनी शुरू कर दी. पेड़ जिधर से हरा था, उधर से कुछ नहीं मिला. दूसरी तरफ खोदा, तो ढेरों धन मटकों में गड़ा निकल आया. जब हीरे-जवाहरात और सोने-चांदी से भरे वे मटके बाहर निकाल लिये गए, तो पेड़ का आधा सूखा हुआ भाग तुरंत हरा होने लगा. सितारा राजकुमारी की तरफ देख कर मुस्कराया :

"देखा आपने? जो लोग धन-संपदा को इस तरह गाड़ कर बेकाम कर देते हैं, वे ऐसे ही सूखे-मुरझाए रहते हैं. खुशी और हंसी भी ऐसा ही धन है, इसे भीतर गाड़ कर रखोगी, तो गमगीन ही बनी रहोगी. निकालो. . .इसे बाहर निकालो और बांट कर चलो. तुम भी इस पेड़ की तरह हरीभरी हो जाओगी!"

राजकुमारी यह चमत्कार देख कर प्रसन्न हो उठी और खिलखिला पड़ी.

राजदूत चकित रह गए. उन्होंने लौट कर राजा को खबर दी. राजा भी बहुत खुश हुआ. उसने वह सारा धन और अपने पास से भी बहुत-सा धन दे कर सितारा के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया.

सितारा किस्मत का सितारा ही नहीं, किस्मत की राजकुमारी भी साथ ले कर घर लौटा. अब वह धनवान हो गया था, फिर भी निश्चित हो कर सोता नहीं था. अपने हाथ से अपना काम करता था और दूसरों को भी बताता था कि 'किस्मत का सितारा बड़ी मेहनत और सूझ-बूझ से ही मिलता है!' ●

१० न्यू मार्केट, वेस्ट पटेल नगर, दिल्ली—८

कहानी

# कुकड़ू-कूं

— रोहिताश्व मित्तल

बम्बई में एक जगह है पाली हिल. समुद्र की सतह से थोड़ी ऊंची. यदि बारिश के दिनों में समुद्र के किनारे से देखा जाए, तो बिल्कुल पहाड़ी स्थान लगेगा. यहीं एक छोटी-सी बस्ती में मिस्टर परेरा का एक पुराना बंगला है. बंगले के सामने के दरवाजे पर एक झबरा कुत्ता हर वक्त तैनात रहता है और पीछे रसोई घर के आसपास मुर्गियां खाने की तलाश में चक्कर लगाती रहती हैं.

इन मुर्गियों में एक लाल रंग का जवान मुर्गा है. उसके मां-बाप, बाबा और सात छोटे भाई-बहन हैं. बाबा उसको बहुत मानते हैं. यहां उसके बहुत मजे हैं. सुबह-शाम श्रीमती परेरा खाने-पीने को खूब देती हैं और बच्चे उससे खेलते हैं. इस पर भी लाल मुर्गे का दिल नहीं लगता. वह बड़ा उदास रहता है. कारण यह कि वह अपने बाबा की तरह जोर से 'कुकड़ू-कूं' की बांग दे कर सूरज को नहीं जगा पाता.

लाल मुर्गा जब भी बोलने की कोशिश करता, तो उसके गले से 'कूऊ-ऊ-ऊ' की आवाज निकल पाती जो अंत में बिल्कुल धीमी हो कर 'ऊ ऊ' तक रह जाती. इस पर उसका बाबा डांट कर कहता : "अपना सिर ऊपर उठा!" मां कहती—"अपना गला खोल!" बहनें कहतीं—"अब एक गहरी सांस लो!"

इस पर लाल मुर्गा इस तरह सांस लेता कि वह एक लाल बैलून की तरह फूल जाता और उसका सिर एक तरफ और दुम दूसरी तरफ दिखाई देने लगती.

"अब बोलो!" उसके बाबा कहते, उसकी मां कहती और उसकी बहनें कहतीं.

"कुऊ-ऊ-ऊ!" वह बोलता. उसकी मां दिलासा देती—"हां, यह पहले से जरा अच्छा है!" किंतु उसके भाई-बहन हंस पड़ते—"इस

तरह तो बच्चे करते हैं?"

लाल मुर्गे को बहुत बुरा लगता.

वह चिल्ला कर कहता—"रात भर जागूंगा. जब तुम सो जाओगे, तो मैं चिल्लाऊंगा, खूब चिल्लाऊंगा, जब तक कि मैं भी बाबा की तरह कुकड़ू-कूं बोल कर सूरज को न जगा सकूं!"

इस पर बाबा डांटते —"अरे भोले, ऐसा मत करना. यदि रात भर मालिक-मालकिन को सोना न मिला, तो दूसरे दिन उनकी हांडी में मिलोगे!"

जवाब में लाल मुर्गा कुछ नहीं बोल पाता, इसी तरह वह रोज मन मार कर रह जाता.

किंतु एक रात, जब सब सो गए, तो वह दबे पांव अपने खांचे से निकल कर बाहर आया. चारों तरफ निगाह दौड़ाई, कहीं कोई न दिखाई दिया. झबरा कुत्ता भी सो रहा था. बाहर आ कर उसने मन ही मन सोचा कि आज सारी रात में तब तक अभ्यास करता रहूंगा, जब तक कि बाबा की तरह बांग दे कर सूरज को न जगा सकूं.

वह झपझप करके उड़ा और बंगले की चारदिवारी पर जा बैठा. सड़क की बत्ती जल रही थी. वह उड़ कर दूसरे मकान की दीवार पर गया, फिर तीसरे मकान की दीवार पर. इस तरह कई मकानों को पार कर वह खुले मैदान में आ गया. मैदान के किनारे एक पुराना तालाब था, जहां दिन में धोबी कपड़े धोया करते थे. पास ही साग-भाजी के खेत थे.

मुर्गे ने चारों तरफ देखा, वहां भी कोई न था. इस सुनसान जगह पर उसे डर लगने लगा. पर उसने साहस से काम लिया. एक पुरानी इमली के पेड़ के नीचे आ कर उसने सोचा कि यहां कुछ आराम करना चाहिए. उसके बाद वह खूब जोर जोर से कुकड़ू-कूं बोलने का अभ्यास करेगा. यह सोच कर वह उस पेड़ के नीचे सो गया.

बहुत देर बाद उसकी आंख खुली. कोई चार बजे का समय होगा. अब उसमें ताजगी आ गई थी. उसने खूब जोर जोर से कुकड़ू-कूं की बांग देनी शुरू की, किंतु बहुत पतली आवाज उसके गले से निकल रही थी.

पर थोड़ी ही देर में क्या देखता है कि कोई काली छाया-सी उठी और एक एक डग भरती

हुई उसके बहुत करीब आ गई. उसकी दो आंखें चमक रही थीं. जब वह बिल्कुल पास आ गई, तो मुर्गे ने देखा कि एक भैंस गुस्से में भरी उसके सामने खड़ी है और उसके नथुनों से सूं-सूं की आवाज आ रही है.

भैंस को देख कर मुर्गा इतना डर गया कि उसने गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाना शुरू कर दिया. शायद सोचा कि उसकी पुकार सुन कर उसके बाबा, मां-बाप और भाई-बहन मदद के लिए दौड़ पड़ेंगे. पर कोई न आया.

अब क्या हो? मुर्गे ने एक पल नहीं खोया. वह चिल्लाता हुआ झाड़ियों में छिपता हुआ भागा. तालाब के किनारे से, धोबियों के टबों से, खेतों की मेंड़ों से, जहां कहीं से भी जगह मिली, वह लुकता-छिपता भागता गया और कुकड़ू-कूं चिल्लाता गया. भैंस भी उसके पीछे भागी.

भागते भागते वह अपने ही मालिक के घर के सामने आ गया. एकाएक घर की बत्ती जल उठी. मिस्टर परेरा का बड़ा लड़का बाहर आया. मुर्गे ने समझ लिया कि अब उसकी खैर नहीं. उसकी अटपटी बांगों से वह बेवक्त जाग पड़ा है.

दि यूनियन बैंक ऑफ़ इन्डिया
प्रस्तुत करता है :

# जाली चैक का रहस्य

यूनियन बैंक के सचेत अधिकारियों ने एक जाली चैक का पता लगाया है, जिस से श्री सिन्हा को बड़ी होशियारी से लुटने की कोशिश की गई थी। और उनके विचार में फ़ोर्ट शाखा में जालसाज़ी की दूसरी कोशिश की जाएगी। सुधीर सिन्हा और उसके मित्र डैरक को आया पर शक है। और वे यूनियन बैंक तक उस का पीछा करते हैं। सुधीर बाहर ही इन्तज़ार करता है ताकि आया उसे पहचान न ले!

अन्दर आया दूसरा जाली चैक पेश करती है। क्लर्क नाम और नम्बर लिखकर फ़ौरन मैनेजर को खबर देता है।

चैक मैनेजर आया से पूछ-ताछ करता है, मगर निडर आया उसे चकमा देने की कोशिश करती है।

चैक मैनेजर वक्त गुज़ारने की कोशिश कर रहा है। आया बड़े आराम से कहती है कि वह कल आ जाएगी। और अपनी परेशानी को ज़ाहिर किए बिना वह जाने के लिए उठ खड़ी होती है।

लेकिन श्री सिन्हा उसे रोक लेते हैं। वह फ़ोन पर पता चलते ही यहीं चले आए हैं।

आया समझ चुकी है कि अब खेल खत्म है। और वह बच निकलने की कोशिश करती है। डैरक और चैक के दो कर्मचारी उसे रोक लेते हैं। क्या उसका साथी भी पकड़ा जाएगा?

kissekahani.com

किंतु लड़का उसको पकड़ने की बजाय भैंस की तरफ दौड़ा. उसने एक पुराना बांस उठा लिया और भैंस को मारते मारते बंगले से बाहर कर आया. मुर्गा इतने में अपने खांचे के पास आ गया था, जहां उसके बाबा, मां-बाप, भाई-बहन जाग गए थे कि न जाने बंगले के दूसरी तरफ क्या कांड हुआ!

मुर्गा उड़ कर अपने खांचे में जाना ही चाहता था कि मिस्टर परेरा के लड़के ने उसे पकड़ लिया और प्यार से उसके परों पर हाथ फेरता हुआ बोला—"तुम तो हमारे टामी से भी अच्छे निकले. तुम नहीं जगाते तो आज भैंस हमारा बगीचा ही खा जाती!" और फिर उसने मुर्गे को खांचे में छोड़ दिया.

अपनी बड़ाई सुन कर लाल मुर्गे का सीना गज भर का हो गया. उसने एक लंबी सांस भर कर जोर की बांग लगाई. तब तक आसमान में लालिमा छा गई थी. मुर्गे ने सोचा कि मेरी बांग से ऐसा हुआ है. अतः एक बार फिर पूरी ताकत के साथ उसने बांग लगाई—"कुकड़ू-कूं!" लड़का बहुत खुश हुआ.

और अब हर सुहानी सुबह को लाल मुर्गा लंबी बांग दे कर सूरज को जगाता है. उसके बाबा सात-आठ बजे तक खांचे में आराम से सोते रहते हैं. ●

२० पाली हिल रोड, बम्बई-५०.

## संतू का खरगोश (पृष्ठ २३ से आगे)

वरना वह सियार उसे पकड़ लेगा."

बुखार में संतू क्या आय-बांय बक रहा है या किसी अज्ञात तरकीब से उसे खरगोश का सुराग मिल गया है, मैं कुछ भी न समझ सका. लेकिन मुझे अंधेरे में बड़ा डर लगने लगा. बोला, "बाबूजी को बुला लूं?"

संतू बोल पड़ा, "नहीं नहीं, बाबूजी के आने पर मैं उसे ढूंढ़ नहीं पाऊंगा, तुम जल्दी चलो." कह कर वह मुझे घसीट कर सड़क पर ले आया. फिर उस सड़क से, मैदान की किस ओर चल पड़ा, मुझे पता नहीं. संतू जैसे नशे में डगमगाता चलता रहा, और मैं उसके पीछे पीछे बहुत देर तक चलता रहा. पैरों में कंकड़ चुभे, दुखने भी लगे. अचानक संतू ठिठक कर खड़ा हो गया. उंगली से उसने एक सूखा पेड़ दिखाया. देखा, मैदान के बीच में एक पेड़ का तना खड़ा है, उसमें न तो कोई डाली है और न पत्ती.

संतू ने कहा, "चलो, उस पेड़ के कोटर में है."

लेकिन आगे बढ़ने पर देखा कि पेड़ की आड़ में किसी के पैर दिखाई पड़ रहे हैं. मैं संतू से लिपट गया.

संतू ने कहा, "डरते क्यों हो? वह वही सियार है. ढेला मार कर भगा दो."

फिर भी डर बना रहा. संतू ने मेरे हाथ में दो बड़े बड़े ढेले पकड़ा दिए. उन्हें फेंकते ही सियार कहीं छिप गया. तब हम उस पेड़ के पास गए. बहुत पुराना पेड़ था—भीतर से खोखला. उसके कोटर के ऊपर पंजों के निशान थे. लगा कि वह सियार बहुत बार वहां तक पहुंचने की कोशिश कर चुका था, पर नाकाम रहा. संतू के आवाज देते ही खरगोश धीरे-धीरे कोटर से निकल कर बाहर आ गया. उसे गोद में ले कर संतू जमीन पर बैठ गया. बोला, "दादा, मेरी तबियत न जाने कैसी हो रही है, मुझ से चला नहीं जाता!"

मैंने उसके माथे पर हाथ रखा, देखा पसीना निकल रहा है. इस अंधियारे में, मैदान में, अनजान जगहमें अब मैं क्या करूं? संतू का सिर गोद में लिये चुपचाप बैठा रहा. संतू निढाल आंखें मूंदे पड़ा रहा और खरगोश उसकी गोद में.

इस तरह कितना समय बीत गया, मुझे नहीं मालूम. किस ओर और कितनी दूर हम लोगों का घर है, यह भी समझ में नहीं आ रहा था. संतू के आसरे ही इतनी दूर आया था. उसी का हाल ऐसा था. लेकिन थोड़ी ही देर में संतू उठ खड़ा हुआ. बोला, "मेरा बुखार उतर गया है. चलो अब!"

मैं भी उठा. बुखार की झोंक में जैसे निश्चित ढंग से रास्ता दिखा कर संतू यहां तक आया था. अब बुखार उतर जाने पर देखा गया कि वह भी रास्ता नहीं जानता है. डूबते हुए चांद की रोशनी में झाड़-झंखाड़ से ढके मैदान के बीच खड़े हो कर संतू ने इधर-उधर देखा. फिर बोल पड़ा, "घर का रास्ता किधर है, दादा?"

मैंने कहा, "मैं क्या जानूं, तू ही तो ले कर आया था."

हम दोनों मुसीबत में पड़ गए. बहरहाल, इधर-उधर चक्कर लगा कर आखिर में रास्ता मिला. घर भी दूर दिखाई पड़ गया.

जब घर में दाखिल हो रहे थे, देखा हाथ में लालटेन लेकर पिताजी खड़े हैं. पीछे मां हैं. हम लोगों को न देख कर ढूंढ़ने निकल रहे थे. गोद में खरगोश लिये हुए बदहवास हालत में हमें देख कर पिताजी के हाथ से लालटेन नीचे गिर गई.

इसके बाद पिताजी या मां ने कभी खरगोश की तौहीन नहीं की. इसके अलावा हर बार छुट्टी में बाहर जाते वक्त संतू का खरगोश संतू के साथ गया. ●

(बंगला से अनुवाद : प्रबोधकुमार मजूमदार)

मूल लेखक का पता :
द्वारा इंडियन स्टेटिस्टिकल इंस्टिट्यूट, २०३ बैरकपुर ट्रंक रोड, कलकत्ता—३५.

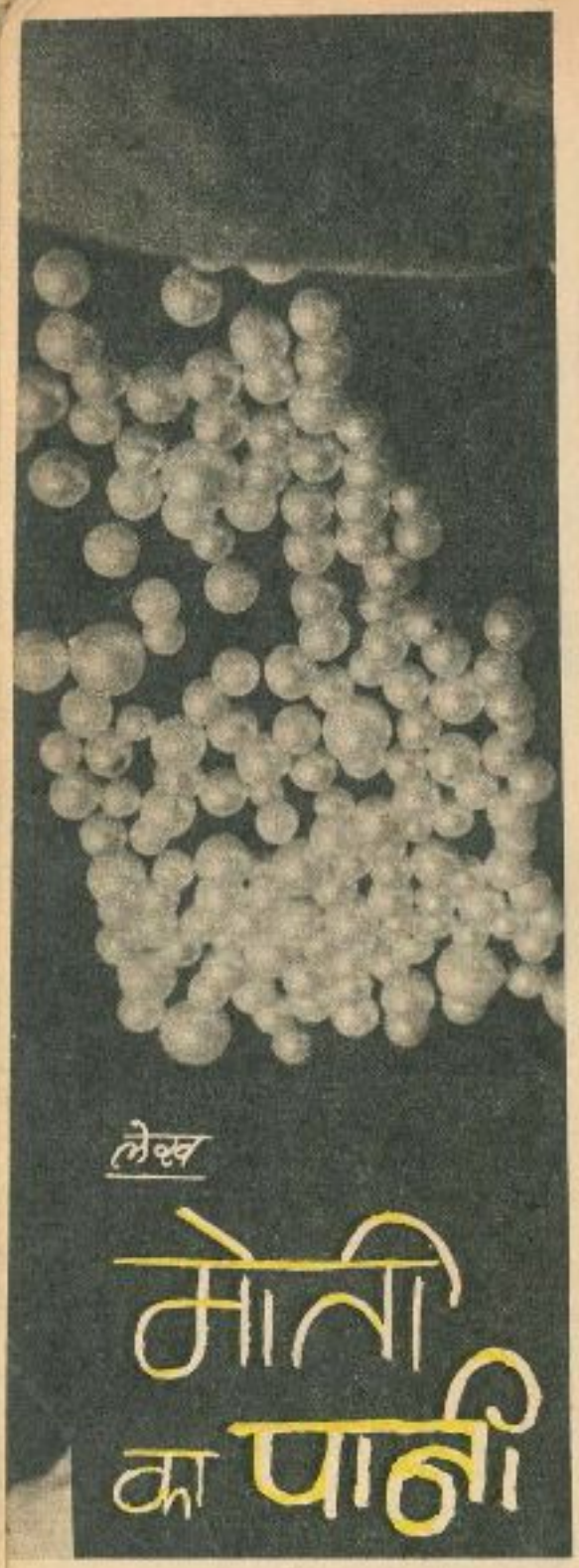

लेख

# मोती का पानी

जगपति चतुर्वेदी

मोती कितनी सुंदर, चमकीली वस्तु है और कितनी कीमती! लोग चीजों की कीमत आंकने में मोती का नाम लेते हैं. पं. मोतीलाल नेहरू की बड़ाई में इलाहाबाद के किसी मशहूर शायर ने लिखा था :

**यूं तो दुनियां के समंदर में कमी होती नहीं,**
**लाखों मोती हैं मगर इस आब का मोती नहीं!**

सचमुच मोती की आब या पानी सराहने की ही चीज है. इस पानी पर कितने ही मुहावरे सुने जाते हैं. आदमी का पानी उतरना — उसकी इज्जत जाना माना जाता है! चूने का पानी सूख जाता है, तो उसे बेकाम ही समझिए. जब मोती का पानी उतर गया, तो उसकी कोई कीमत नहीं रह जाती. इसी लिए रहीम कवि का यह दोहा कितना प्रसिद्ध है :

**रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून,**
**पानी गये न ऊबरे, मोती, मानस, चून!**

समझने की बात है कि पानी को चमक-दमक के अर्थ में क्यों लिया जाता है. लोग कहते हैं कि स्वाति नक्षत्र में बरसे पानी की बूंदों से ही पपीहा अपनी प्यास बुझाता है. केले में स्वाति नक्षत्र का गिरा पानी कपूर पैदा करता है. सीप के अंदर स्वाति नक्षत्र के पानी की बूंद पहुंचने से मोती बन जाता है. कुछ लोग तो इन बातों को सच भी मानते हैं, लेकिन बात ऐसी है नहीं.

मोती समुद्र में रहने वाले एक जंतु की करामात है, जिसको सीप कहा जाता है. बच्चों को सीप में दूध या दवा रख कर पिलाते हैं. वह एक छोटी लंबी चमकती प्याली-सा होता है. यह शंख, घोंघे आदि की तरह का पानी का एक जंतु है. अपने काम में तो हम एक प्याली-सी चीज ही लाते हैं, लेकिन असली रूप में दो प्यालियां जुड़ी होती हैं. सीपी या सितुही के दोनों पल्ले (जिन्हें पुट कहते हैं) लंबान में एक किनारे किवाड़ के कब्जे की तरह किसी वस्तु या बंधनी से जुड़े होते हैं और लंबान का दूसरा किनारा खुला होता है. दो प्यालियों या पुट से बनी होने से उसे द्विपुट भी कहते हैं. इस दो पुटों वाले कवच या घर के भीतर रहने वाला जंतु द्विपुटी भी कहा जाता है.

सीपी या सीप को हम किसी भी तालाब में देख सकते हैं, लेकिन उसमें मोती कभी नहीं मिल सकता. वह तो समुद्र के सीप में ही मिल सकता है. हमारे देश में मन्नार की खाड़ी में समुद्री सीपों में मोती मिलता है, जिन्हें गोताखोर बहुत खोज कर निकाल लाते हैं.

सब से बड़े आकार के मोती प्रशांत महासागर में फिलीपाइन और टैहिटी के निकट तथा हिंद महासागर में मन्नार की खाड़ी, फारस की खाड़ी और लाल सागर आदि में पाए जाते हैं. अमरीका में कैरीबियन सागर में भी मोती होते हैं. लेकिन प्रशांत और हिंद महासागर वाले मोतियों से वे कुछ उतर कर होते हैं.

मोती कैसे बनते हैं, यह भी बड़ा दिलचस्प है. उसके बनने के तीन ढंग हैं. कभी कभी सीप के अंदर कोई बाहरी

वस्तु, जैसे एक बालू का किनका, या दूसरी नन्ही चीज पहुंच जाती है, तो सीप का जंतु अपने बदन से एक वस्तु बाहर बहाता है. उसको नैकरी या मुक्तास्तर कहा जाता है. इस वस्तु को वह अपने बचाव के लिए ही उस किनके के चारों ओर लपेटता रहता है. एक बार यह क्रिया प्रारंभ हो कर अधिक दिनों तक चलती रहती है. बनने का दूसरा कारण कोई रोग हो सकता है जो सीप के कुछ अंगों में रुकावट पैदा कर रहा हो. कभी कभी ऐसा भी होता है कि सीप का कोई अंडा बढ़ न पाया और सीप से बाहर न हो कर भीतर ही पड़ा रहा, तो वह नैकरी के लिपट जाने से उत्तम मोती बन सकता है. यह मोती बनने का तीसरा ढंग है.

यह आश्चर्य की बात है कि जब कोई सीप अच्छी तरह का बना होता है और अकेला होने से पूरा बढ़ने का अवसर भी पाता है, तो भी उसके अंदर शायद ही कभी मोती बना मिले. लेकिन जब बहुत से सीपों का जमघट होता है, तो उनमें से बहुतसे सीपों में मोती बने मिलते हैं.

मोतीवाले सीप बहुत बड़े होते हैं—आठ से दस इंच या कभी कभी पंद्रह इंच व्यास तक और उनके भीतर दो इंच लंबाई और चार इंच गोलाई तक के बड़े मोती बने पाए जाते हैं.

पुरानी दुनिया के असली मोतियों का हार बड़ा कीमती माना जाता है. वह एक लाख डालर का हो सकता है. पुरानी दुनिया के मोतियों की उत्पत्ति प्रकृति द्वारा ही होती है, लेकिन अब तो उनकी पूछ उतनी अधिक नहीं रह गई, क्योंकि अब बनावटी मोती बहुत तैयार होने लगे हैं. ये बीसवीं सदी के प्रारंभ में बनने आरंभ हुए—ये बनावटी मोती सीप द्वारा ही पैदा किए जाते हैं, लेकिन वे सीप आदमी द्वारा खेती करने की तरह पाले जाते हैं. उनके लिए सीपोंके अंदर कोई नन्ही हीर या ऐसी चीज डाल देते हैं जो सीप को कुछ दिक्कत की चीज या उत्तेजना पैदा करने वाली-सी हो.

उसी से अपनी रक्षा करने की कोशिश में सीप का जंतु उन पर अपनी नैकरी लपेटने लगता है. ऐसी क्रिया तीन से लेकर सात वर्ष तक होती रह सकती है, जिससे वही हीर या मनुष्य द्वारा सीप में रखा पदार्थ बढ़िया चमकदार मोती हो जाता है. लेकिन क्या मजाल कि इस बनावटी या तरकीब से सीप द्वारा बनवाए मोती और प्राकृतिक रूप से बने मोती में आप कुछ भेद कर सकें! बहुत बड़े पारखी ही इस अंतर को पहचानते हैं. बहुत जानकार होने पर भी इन दिनों मोतियों को १०० फी सदी ठीक पहचानना मुश्किल काम ही है. वे बनावट, रंग-रूप, चमक और दिखावट में बिल्कुल एकसे होते हैं. जब इन मोतियों को पेट चीर कर या तोड़ कर देखा जाए, तभी ठीक तरह मालूम हो सकता है कि वे बनावटी हैं या प्राकृतिक. मोती का केंद्र का भाग ही उसकी असलियत या असली पैदाइश की बात बता सकता है. ●

७६ कूचा राय गंगाप्रसाद, मालवीय नगर, इलाहाबाद

गोताखोर द्वारा समुद्र से मोती निकालने की तैयारी

# असली कुत्ता (पृष्ठ १५ से आगे)

पन का सबक सिखाते हैं डगी को और उसमें मारपीट कैसे की जाती है यही सबक सबसे जोरदार—नोचना-बकोटना, दांतों से काटना, पैरों से पैर सटा कर पीछे के पैरों के सहारे उठ खड़ा होना. एक जब दूसरे की गर्दन में दांत जमा देता, तो दूसरा नीचे झुक कर सामने के पैरों को मुंह में पकड़ लेने का दांव सीख जाता. दो जब लड़ा करते, तो तीसरा खड़े खड़े देखा करता और मानो हंसता. हंसता कहता—वाह वाह! बिल्कुल रेफरी की तरह जांचता रहता कि किसने फाउल किया. फिर तीनों ही मुहल्ले के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ लगाते. मोटर आती, हार्न बजाती, वे हट जाते. मोटर के निकल जाने के बाद फिर भूंकते हुए उसका पीछा करते, फिर लौट आते.

डस्टबीन में जूठन फेंकी जाती, तो तीनों भागते हुए आते. झगड़ते नहीं. जिसे जो मिल जाता छीन-झपट कर खा लेता. कभी कभी तंग आ कर कोई इनको डराने लगते, तो वे भी कौवों पर झपटते. कभी कभी कौवों के साथ खेला भी करते. दो कौवे उड़ कर डगी के दो तरफ आ कर बैठ जाते; एक सामने और एक पीछे. डगी जब गर्दन मोड़ कर कनखियों से सामने वाले को देखता, तभी पीछे वाला कौवा फुदक कर डगी की लंबी पूंछ को पकड़ कर खींच लेता. और जब पीछे वाले कौवे पर वह हमला करना चाहता, तो सामने वाला आ कर उसके सिर पर चोंच मार देता. लेकिन पीछे वाला मामला ही जोरदार होता. पीछे वाला कौवा कभी कभी इतनी जोर से डगी की दुम खींच देता कि डगी से खफा हुए बिना नहीं रहा जाता. वह अपनी दुम को पकड़ने के लिए शरीर को आधी गोलाई में मोड़ कर कई दफे दन-दन चक्कर लगाता रहता. लेकिन दुम थी कि मुंह से बराबर की दूरी बनाए चक्कर लगाती रहती!

इसी बीच दूर से आवाज आती —"ड. . .गी!"

रतन की आवाज. रतन कालेज से लौट रहा होता. बस, जंग का मैदान छोड़ कर डगी बेतहाशा भाग खड़ा होता और काफी दूर जा कर ठिठक कर खड़ा हो जाता; क्योंकि उसके पीछे से लगातार गर्म और तेज आवाज सुनाई पड़ रही होती —"ड. . .गी! डगी! डगी! ड. . .गीss!"

डगी की बेतहाशा दौड़ यानी राम दौड़ की रफ्तार घटने लगी.

राम दौड़ की रफ्तार घट कर लक्ष्मण दौड़, उससे घट कर भरत दौड़, फिर कैकेयी दौड़, फिर मंथरा दौड़. आखिरकार पैर एक दम थम जाते और वह पीछे की ओर करुण नजरों से देखने को मजबूर हो जाता. इसके बाद लौटता, तेजी से भाग कर बिल्कुल रतन के सामने चित पड़ जाता और चारों पैर उठा कर जमीन पर दुम पटकता और बेहया की तरह हंसता रहता. शायद कहता—देख लो, मालिक, कैसे भागते भागते मैं ठिठक कर खड़ा हो गया और कैसे एक दौड़ में तुम्हारे पास आ कर दुम हिला रहा हूं, देखो!

लेकिन मालिक रतन भी बड़ा जबरदस्त है—बंदा भुलावे में आने का नहीं. बायें हाथ से डगी का एक कान मसली से पकड़ कर घसीटते हुए उसे घर ला कर उसकी बेंत से अच्छी खासी मरम्मत कर देता.

शुरू शुरू में डगी बेहद चिल्लाता था—आंऊ आंऊ. . .आंऊ. . .आं. . .आंऽऽऽ—यानी मर गया, मर गया, दइया रे! मइया रे! इससे रतन और भी ज्यादा बिगड़ जाता था और पहले से भी अधिक निर्दयता से पीटता था. डगी ने अब यह समझ लिया है, तभी तो मार खाने की पद्धति को पूरी पूरी बदल कर अब वह सिर्फ कातर दृष्टि से रतन को देखता है, चारों तरफ पैरों को समेट कर पड़ा पड़ा मार खाता है, भरसक चिल्लाता नहीं, सिर्फ असह्य हो जाने पर धीमी आवाज में ओह ओह करता है. जिसका मतलब यह होता है कि बस करो, बस करो, या और मारो, और मारो, और मारो! चिल्लाता नहीं, इसलिए रतन उसे थोड़े में ही छोड़ देता और थोड़ी देर बाद कमरे का दरवाजा बंद कर डगी के सामने के दोनों पैर पकड़ कर उसे उठाते हुए कहता—"यू आर फ्राम ए हाइ फैमिली; व्हाई डू यू बिहेव लाइक ए देसी फैमिली सन? (तुम एक ऊंचे परिवार के वंशज हो, तुम देसी परिवार की औलाद जैसा बरताव क्यों करते हो?) ऊंचे खानदान की औलाद न होने पर तुम्हें कहीं कोई जगह नहीं!"

इसके बाद दांत पीसता हुआ कहता—"फिर ऐसा हुआ, तो तुम्हें मार डालूंगा. आजकल जमाना कैसा है, जानते हो न? उस रोज एक जेबकतरे को पकड़ कर लोग पीटने लगे, तो उसके मरने के बाद ही पीटना छोड़ा."

डगी इससे बेहद खुश होता, चेहरा देखने से ही पता लग जाता कि हंस रहा है. उसकी जीभ निकल आती और उससे टप टप लार झरने लगती.

रतन के उसे छोड़ देते ही वह दो-एक छलांग मार कर उसी लंबी जीभ से रतन का मुंह चाट लेना चाहता; रतन उसे घुड़की लगाते हुए कहता—"खबरदार! पता नहीं क्या खा आया है तू! रास्ते पर गोबर चाटता है, यह तो मैंने अपनी आंखों से देखा है. मेरे मुंह से अगर जीभ छुवाई, तो जान से मार डालूंगा!"

क्षण भर में ऊंचे खानदान का डगी रतन के पैरों के नीचे लुढ़क जाता, उसी जीभ से पैर चाट कर अपनी दुम से रतन को पट-पट मारता हुआ बेंत मारने का बदला चुकाता.

घर से निकलने का मौका मिला कि सीधे सड़क पर,

और रास्ता पार कर उन्हीं दो कुत्तों के पास. वे इसका मुंह चाट देते, पैर चाट देते, वह भी उनके मुंह चाट देता और पैर चाट देता.

कुछ ही देर में तीनों कुत्तों के शोर से मुहल्ला चौकन्ना हो उठता. एलुमिनियम के बरतन वाले के पीछे लग गए हैं. वह शख्स 'ऐं-कैं. . .आं-आं' कर विकट आवाज में चीखने लगता. फिर ग्वाले की किसी भैंस के पीछे लग गए या किसी की पालतू बिल्ली के पीछे या किसी पगड़बाज काबुलीवाले के पीछे पड़ गए हैं या मैदान के दूसरी ओर के किसी कुत्ते को देख कर चिल्ला रहे हैं.

डगी की आवाज साफ पहचानी जाती—बिल्कुल ही हल्की आवाज, कतई गुरु-गंभीर घुपदी नहीं, जिसे सुन कर लोग डरते हैं, चोर-उचक्के दीवार लांघने को हो कर भी ठिठक जाते हैं. घड़ियाल बजाने के सामने अगर एक डंडी से लोटा बजाओ, तो वैसा ही लगेगा जैसा बगल के मकान के अलसेशियन कुत्ते के भूंकने के सामने डगी की हल्की चीख!

रतन के दादा हिमाद्रि कहते हैं—"न जाने कहां से तू यह उठा लाया! जरा इसका भूंकना तो देख. . .चोर आ जाए, तो इसके गले से आवाज नहीं निकलेगी. देख लेना!"

"कभी नहीं, देख लेना!"

बिल्कुल ऐसा ही हुआ, हूबहू ऐसा ही. एक रात घर में चोर घुसा था. डगी घर ही पर था, पर एक बार भी नहीं चिल्लाया. चोर ही चिल्ला उठा, "अरे बाप रे! जान गई, रे दादा. . .!"

और इतना कह कर वह दीवार से इस ओर नीचे गिर पड़ा. कुछ ही दिनों से इस मुहल्ले में चोरों का उत्पात मचा हुआ था. उस रात रतन के मकान की चहारदिवारी पर चढ़ कर जैसे ही भीतर उतरने के लिए उसने पैर बढ़ाया था कि फौरन डगी ने उछल कर उसकी एड़ी पर दांत गड़ा दिया. ऐसा दांत गड़ा दिया था कि डगी के सहारे वह झूल रहा था. उस आदमी ने मारे दर्द के चिल्ला कर पैर झटक दिया था और साथ ही साथ डगी को भी. लेकिन चोर की एड़ी का थोड़ा-सा गोश्त डगी ने काट लिया.

डगी चिल्लाया नहीं. उसे आहट मिली थी तभी वह समझ गया था कि चोर चहारदिवारी लांघ कर उतरने जा रहा है. तभी वह दीवार के नीचे आ कर खामोश खड़ा हो गया था. जैसे ही एक पैर नीचे लटका कर आदमी ने नीचे उतरने की कोशिश की, कि डगी ने उछल कर उसका पैर दबोच लिया.

चोर ही ने चिल्ला कर लोगों को जगाया था और इसी से पकड़ा गया. उसे और दो कुत्तों ने पकड़ लिया. वे ऐसे चिल्लाने लगे कि पहरे की पुलिस लपकती हुई आ गई. उस वक्त चोर के दोनों तरफ दो कुत्ते लगे थे.

रतन ने चोर को देख कर ताज्जुब करते हुए कहा, "बताना जी, तुम कौन हो? तुम्हें तो मैं पहचानता हूं. नाक का यह मस्सा मेरा बेहद पहचाना हुआ है. क्यों, तुम्हारी टोपी कहां गई? तुम्हारा पाजामा और कमीज किधर गए?"

आंखें फाड़े रतन के मुंह की ओर देखते हुए उस आदमी ने सिर नीचा कर लिया और अपने पैरों की ओर देखता हुआ बोला—"यह कुत्ता क्या है, शैतान की औलाद है! ओह. . .बिल्कुल भूंकता ही नहीं! हाय, मेरी एड़ी ही काट ली है इसने. . .ओह!"

रतन ने कहा, "मियां साहब, देसी जो है! इसकी आदत ही ऐसी है. अलसेशियन तो है नहीं—जर्मन काउंट का कुत्ता. जर्मन बाप और फ्रान्सिसी मां का पिल्ला तो है नहीं! इसका बाप और बाप का बाप डगी कुत्ता तो था नहीं! इसकी चौदह पुश्त में किसी को तमगे तक नहीं मिले! यह है देसी. . .बेईमान की जात! क्यों, इस तरह मुझे घूर रहे हो, मियां? मुझे पहचान नहीं रहे हो? इसे तो तुमने अलसेशियन कह कर मुझ ही को टिकाया था—वहां पुल के किनारे! चार रुपये तीस पैसे नकद, और मेरी पामलट कलम भी. . . सुनो, अगर अलसेशियन होता, तो तुम्हें फौरन पहचान लेता. . .गनीमत कि डगी हमारा देसी है!"

उस आदमी ने सिर झुका लिया.

रतन ने डगी को अपने पास खींच कर कहा, "भाई, डगी. . .डगी! यू आर फ्राम सम हाई फैमिली आफ देसी डॉग्स (तुम देसी कुत्तों के किसी उच्च परिवार के हो)!"

कान उमेठने के साथ ही साथ डगी चित लेट गया और चारों पैरों को ऊपर उठा कर एक साथ जोड़ा. सामने ही रास्ते पर दूसरे दो कुत्ते बैठे डगी का दुलारना निहार रहे थे और शायद हंस भी रहे थे—कम से कम देख कर ऐसा ही लग रहा था.

रतन की बहन बिस्कुट ला कर बोली—"मंझले भैया, अम्मा ने दिए हैं, कुत्तों को दे दो!"

(अनुवाद : प्रबोधकुमार मजुमदार)

मूल लेखक का पता : तल्ला पार्क, कलकत्ता २

## कलई खुल गई !

**जकार्ता की खबर है कि एक इंडोनेशियाई लड़के ने अपने मां-बाप को धमकाने के इरादे से आत्महत्या करने का ढोंग रचा. लेकिन उसे ऐसा सबक मिला जिसे वह जिंदगीभर याद रखेगा.**

**बात यह हुई कि किसी बात पर नाराज हो कर लड़के के माता-पिता ने उसका जेब खर्च बंद कर दिया. इस पर लड़के ने जाहिर किया कि उसने जहर खा लिया है. लड़के को तुरंत अस्पताल ले जाया गया. डाक्टर लड़के की चालाकी को ताड़ गया. उसने लड़के के पेट का आपरेशन करने का स्वांग रचा ही था कि लड़का अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़ा हुआ!**

(१४-१०-६८ के 'ईवनिंग न्यूज आफ इंडिया' से)

आओ चलें—

# बालों के जंगल में

kissekahani.com

—रमेशदत्त शर्मा

बच्चो, एक रात मैंने एक अजीब सपना देखा. क्या देखता हूं कि मैं एकदम छोटा हो गया हूं. कितना छोटा हो गया हूं, इसका अंदाजा तुम इसी बात से लगा लो कि जिस चीज को मैं रस्सी समझ कर चढ़ रहा था, वह वास्तव में एक बाल था! चढ़ते चढ़ते, चढ़ते चढ़ते जब मैं ऊपर तक पहुंचा, तो क्या देखता हूं, बालों का एक घना जंगल उग रहा है. किसी दाढ़ीजार की दाढ़ी रही होगी! इससे पहले कि मैं बालों के उस घने जंगल में खो जाऊं, मैंने देखा, उन बालों में से एक बड़े-से बाल ने मुझे आवाज दी : 'तुम यहां कहां घूम रहे हो?' मैं डर गया और जल्दी से उस बाल की जड़ में छिपने की कोशिश करने लगा. बाल की जड़ के साथ साथ मैं भीतर खाल में घुस गया.

मैंने देखा, जड़ भीतर तक चली गई है. एक थैली-सी जगह में मैंने बाल की जड़ का आखिरी सिरा देखा—फूला हुआ. जैसे पौधे को उसकी जड़ से खूराक मिलती है, वैसे मैं देख रहा हूं कि बालों को भी अपनी जड़ से खूराक मिल रही है. मैंने यहां से ऊपर चढ़ने की कोशिश की. पर यहीं पास में बालों को उनकी कुदरती चिकनाई देने वाली नली से कोई तेलनुमा चीज रिस रही थी. तभी अचानक बगल की मांसपेशी में हरकत हुई और बाल खड़ा हो गया. यानी एक ही झटके में मैं खाल के बाहर, फिर बालों के जंगल में आ गया.

दाढ़ी के ये बाल बड़े सख्त थे. यानी इतनी ही मोटाई का तांबे का तार हो, तो उसमें और बाल की मजबूती में कोई अंतर नहीं. मगर बाल किसी धातु के नहीं बने होते. ये एक प्रोटीन के बने होते हैं, जिसका नाम है केराटिन. केराटिन में अठारह किस्म की अमीनो एसिड और गंधक होती है. मुझे याद आया कि उस दिन अखबार में पढ़ा था—बालों में इतना नाइट्रोजन होता है कि नाइयों के यहां जो हर रोज बालों की फसल काटी जाती है, उसकी खाद बना कर खेतों में डाली जाए, तो अन्न देने वाली फसलों की पैदावार बढ़ाई जा सकती है.

तभी वह दाढ़ी वाला जाग गया. शायद ठंड लग रही थी, तभी तो उसके बाल खड़े हो गए थे. जब मैं बालों के इस जंगल में चढ़ा था, तो उसके बाल झुके हुए थे. मगर अब सीधे खड़े थे. उसे इतनी ठंड लग रही थी कि उसने झट से कंबल निकाला और ओढ़ लिया.

मैंने सोचा बेचारे जानवरों को ठंड लगती होगी, तो वे क्या करते होंगे. उनके पास न तो कोट होता है न कंबल. फिर मेरी समझ में आया कि उनकी खाल पर तो इतने घने बाल होते हैं कि उन्हें और किसी कोट की जरूरत ही नहीं होती. उनके लिए उनके बालों का ही कोट काफी है. देह का तापमान बालों की वजह से ही जाड़ों में ज्यादा गिरता नहीं और गर्मियों में ज्यादा चढ़ता नहीं.

अब आदमी की खाल पर बाल इतने कम हो गए हैं कि उसे ठंड से बचने के लिए भेड़ के बालों से बने ऊन का कोट पहनना पड़ता है. किसी कविवर का वह दोहा तो तुमने सुना ही होगा, जिसमें कहा गया है कि मूंड़ मुंड़ा लेने से कोई संत नहीं हो जाता, ऐसा होता तो भेड़ तो इतनी बार मूंड़ी जाती है कि सबसे पहले बैकुंठ जाती! दूसरी ओर बहुत से लोग दाढ़ी बढ़ा लेते हैं. पर हर दाढ़ी वाला कोई टैगोर थोड़े ही होता है!

शायद ये बात मेरे मुंह से जोर से निकल गई. जिस आदमी की दाढ़ी की मैं सैर कर रहा था, उसने सुन लिया और डपट कर पूछा, "ऐ! क्या मेरी दाढ़ी के बाल गिन रहा है?"

'जी. . .जी, हां, जी. . .!" मेरी आवाज कांप रही थी. मुझे डरता देख कर वह मुस्कराया और बोला—"सुनो, जवान आदमी की देह पर तीन लाख से पांच लाख तक बाल होते हैं और चेहरे पर कोई तीस हजार बाल होते हैं!" फिर वह आगे बताने लगा—"ठोड़ी के ऊपर और नाक के नीचे इतने घने बाल होते हैं कि एक वर्ग इंच में ७०० से ८०० तक गिने जा सकते हैं. आम तौर पर बाल महीने भर में आधा इंच बढ़ते हैं, यानी साल भर में छह इंच. पर बालों की उमरिया बाली होती है. हर बाल कुछ साल तक लहलहा कर फिर घिर जाता है और उसकी जगह दूसरा बाल बढ़ता है."

लगता है दाढ़ी वाले को लेक्चर झाड़ने का मर्ज

था. कहने लगा—"बालों का काला रंग इनके भीतर 'मैलेनिन' नामक रासायनिक द्रव्य की वजह से होता है."

मैंने पूछा—"अच्छा, बाबा, यह बताओ कि देह पर के बाल तो गर्मी-सर्दी का कंट्रोल करते हैं, पर ये नाक के बाल और पलकों के बाल क्या करते हैं?"

दाढ़ी वाला बोला—"अरे भई, धूल के कण और दूसरी चीजें इन बालों की वजह से रुक जाती हैं और आंख या नाक में नहीं घुस सकतीं."

फिर मैंने पूछा—"अच्छा, बहुत-सी औरतों के दाढ़ी-मूंछ क्यों आ जाती हैं?"

इस बार दाढ़ी वाला जरा चौंका. फिर बताने लगा, "देखो, शरीर के भीतर एक ग्लैंड या ग्रंथि होती है जिसे पीयूष ग्रंथि या पिट्यूटरी ग्लैंड कहते हैं. जिन औरतों की देह में इस ग्रंथि से 'एंड्रोजन' नामक रस ज्यादा निकलने लगता है उनके चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें निकल आती हैं."

अब तक मैं उसकी दाढ़ी के बालों की सैर करते करते ऊपर सिर तक आ पहुंचा था. यहां मैंने देखा कि सिर के बीचोबीच एक टापू बना हुआ है. इस गोल हिस्से में सारे बाल सपाचट थे और खोपड़ी शीशे-सी चमक रही थी. मैंने उस टापू पर विश्राम करते हुए पूछा, "यहां के बाल क्या हुए?" दाढ़ी वाला बोला, "झड़ गए. इन बालों की जड़ें कमजोर हो गई थीं. उन्हें कुदरती चिकनाई मिलनी बंद हो गई थी, सो झड़ गए. बाल झड़ने का यह रोग पुश्तैनी है. हमारे परिवार में कई पुश्तों से चला आ रहा है. मगर अब वैज्ञानिक बंजर खोपड़ी में भी बालों की पौध लगाने में सफल हो गए हैं."

"अच्छा!" मैंने विस्मय में डूबते हुए कहा—फिर पूछा, "और क्या क्या किया है वैज्ञानिकों ने बालों के बारे में?"

दाढ़ी वाला अपनी लंबी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला—"वैज्ञानिकों ने ऐसी खोज की है कि बाल देख कर बता सकते हैं कि बाल लड़की का है या लड़के का!"

दाढ़ी वाले की बातें सुनने के बाद मैं टापू से उतर कर सिर के बालों के चक्कर लगाने लगा. मैंने देखा वहां फफूंदी लगी हुई है. मैंने सोचा कितना गंदा आदमी है, बालों की सफाई नहीं करता. यह फफूंदी बढ़ती रहेगी, दाद और खुजली पैदा करेगी, तब पता चलेगा बच्चू को! तभी मैंने देखा एक जूं मेरी ओर लपकी. "अरे, बाल हैं या बवाल! इसके बालों में तो जूं भी हैं!" मैं भागा बस, यों समझो कि बाल बाल बच गया! नहीं तो वह जूं मुझे हजम कर जाती.

दाढ़ी वाले ने सुना, तो बड़ा झल्लाया और मूंछों पर ताव देते हुए गरजा, "अभी तेरी हजामत बनाता हूं!" मैंने कहा, "खुद तो कभी नहाता भी नहीं, बाल साफ नहीं करता, इतनी गंदगी पाल ली है और मेरी हजामत बनाएगा!" यह सुनते ही उसने जोर से डांटा—"चल भाग यहां से, बड़ा आया बाल की खाल निकालने वाला!" और तभी मेरी आंख खुल गई. मैंने देखा मेरी बेटी अल्पना चिल्ला रही थी—"डैडी...डैडी! मेरी चोटी तो छोड़िए!" ●

डी–३ राणाप्रताप बाग, दिल्ली–७

यह है बाल का वह हिस्सा जो खाल के भीतर धंसा रहता है, जिसके उप-भागों का विवरण यह है—१–केराटिन नामक प्रोटीन के पुराने रेशे २–बाल जिस गड्ढे—रोम कूप में धंसा रहता है उसकी बाहरी परत ३–भीतरी परत ४–बाल के ऊपर की कड़ी परत ५–केराटिन के नए रेशे ६–मेलानो साइट जिनमें मौजूद मैलेनिन के कारण ही बालों का रंग काला होता है ७–सब से निचला हिस्सा प्याली जैसा ८–इस फूले हुए भाग को बाल का बल्ब कहते हैं ९–बाल की बाहरी परत के छिलके, जो माइक्रोस्कोप या सूक्ष्मदर्शी से ही नजर आते हैं.

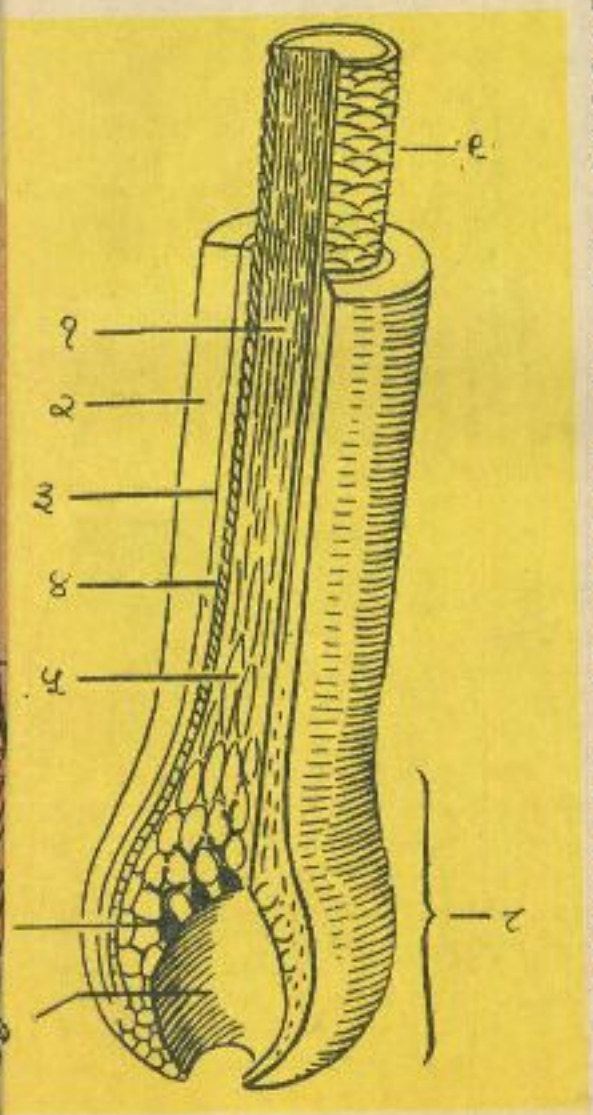

सर्वोत्तम
सफ़ेदी के लिए–
# टिनोपाल

सफ़ेद कपड़ों की धुलाई के बाद आखिरी बार खँगालते समय पानी में थोड़ा-सा टिनोपाल मिला लीजिए। फिर देखिए, आपके शर्ट, साड़ियों, चादरों व तौलियों की सफ़ेदी का निखार! टिनोपाल इस्तेमाल करने का खर्च? प्रति कपड़ा एक पैसे से भी कम! वैज्ञानिक पद्धति से बनाया गया व्हाइटनर टिनोपाल कपड़ों के लिए बिल्कुल हानिरहित है!

टिनोपाल की नव्य पैकिंग:

'एक बाल्टी के लिए एक पैकेट'

नया 'इकोनामी पैक'

® टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए. बाल, स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।
सुदृढ़ गायगी लि., पो. बॉ. बॉक्स ९६५, बम्बई-१ बी आर

# शिकार और शिकारी (पृष्ठ ३८ से आगे)

और इस प्रकार रीछ ने सिर पीटा, भैंसे ने भी पीटा, ने अपनी छातियों को अपने अपने बच्चों की खातिर टा और रोते-पीटते आए अपनी संतानों की सेवा में. चों ने जो बुजुर्गवारों का जुलूस अपनी ओर आते देखा, दूर ही से नारे लगाने आरंभ कर दिए—"शेरनी माता . . ."

"जय!"

"जंगल की शांति. . ."

"बनी रहे!"

"जंगल के बच्चे . . ."

"एक हों!" वगैरा वगैरा नारे लगता हुआ बच्चों जुलूस चल पड़ा उधर ही, जिधर शिकारियों ने अपनी मान बनाई हुई थी. जुलूस में कुछ के हाथों में बड़े साइनबोर्ड्स थे, जिन पर लिखा हुआ था—"शेरनी ता जिंदाबाद," "जंगल की शांति बनी रहे," "हम सब क हैं" वगैरा. जुलूस नारे लगाते हुआ शिकारी की ओर ता चला गया.

दूर मचान पर बैठे शिकारी नजर आए. जंगली नवरों के इतने बच्चों को एक साथ अपनी ओर आते ख कर शिकारियों ने फटी फटी आंखों से उनकी ओर खा. दोनों ने अपनी अपनी बंदूकें संभाल लीं और से ही जुलूस उनके नजदीक पहुंचा, शिकारी महाशय निशाना साध कर घोड़ा दबा दिया. पप्पू शहीद होने लिए सबसे आगे बढ़ आया था. मगर यह क्या? शिकारी हाथ से बंदूक छूट गई और गोली बराबर में बैठे जैक्सन ी छाती में जा घुसी. जैक्सन वहीं मचान पर ढेर हो गया. ह आश्चर्यजनक घटना देख कर सब चौंक पड़े. तभी नबिलाव के बच्चे ने देखा कि चींटी की बच्ची शिकारी क गाल पर तेजी से रेंगती हुई पीछे की ओर भागी जा रही है और शिकारी फटी आंखों से इधर-उधर देखता हुआ अपना गाल सहला रहा है. चींटी की बच्ची यहां जुलूस पहुंचने से पहले ही पहुंच चुकी थी.

बच्चों ने यह नजारा देखा, तो एक जोरदार नारा हवा में बुलंद हुआ, "जंगल के बच्चे. . ."

"एक हों!" विजयोल्लास से भरपूर सैकड़ों स्वर हवा में गूंज उठे.

"शेरनी माता की . . ."

"जय!" इधर बच्चे नारे लगा रहे थे, उधर जंगल के मां-बापों का दल अपने खुराफाती बच्चों की चिंता में तेजी से आगे बढ़ा चला आ रहा था और क्योंकि यह दल दूसरी ओर से आ रहा था, इसलिए शिकारी इनकी ओर बेखबर थे. दल नजदीक पहुंच गया. इधर शिकारी ने दूसरी बार बंदूक हाथ में उठाई ही थी कि हथिनी पीछे से भागी चली आई, "अरे मुए! मेरे इकलौते पर निशाना साध रहा है? तेरा नाश हो!" कहते हुए हथिनी ने पीछे से आ कर अपनी लंबी सूंड मचान पर फैला दी और झपट कर बंदूक छीन ली शिकारी के हाथ से. फिर दो-तीन धक्के दिए पेड़ को. मचान चरमराने लगी. शिकारी हड़बड़ा कर इधर-उधर देखने लगा घबराया-सा. सूंड बढ़ा कर हथिनी ने मचान को भी नीचे खींच लिया.

शिकारी के होश गुम! मचान सहित एक ही झटके में जमीन पर लुढ़कने लगे महाशय जी! फिर क्या था. विजय के नारे लगाती हुई बच्चों की सेना एकदम टूट पड़ी अपने शिकार पर. बात की बात में शिकारी और उसके साथी की बोटियां तक गायब हो गईं.

जंगल के बच्चों का महान नेता, स्वर्गीय शेरनी माता का सबसे बड़ा पुत्र पप्पू एक ओर खड़ा गर्व से सीना ताने यह सब देख रहा था.

अगले दिन, जंगल की सरहद के पास, जहां पक्की सड़क से कच्ची पगडंडियां जंगल में दाखिल होती हैं, लोगों ने देखा, एक बोर्ड लगा हुआ है. इस बोर्ड पर बहुत ही सुंदर अक्षरों में लिखा गया था, "इस जंगल में शिकार खेलना मना है." बोर्ड के नीचे एक कोने पर मोनोग्राम बना था—'आर्टिस्ट पप्पू पेंटर'. ●

**३ हनुमान चौक, देहरादून, (उ. प्र.)**

## प्रति मास नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ो और हमें २० दिसंबर तक लिखो कि अपनी पसंद के विचार से कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है. इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे, केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन बच्चों की पसंद का क्रम बहुमत के क्रम से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, 'पराग' में उन सब बच्चों के नाम छापे जाएंगे और उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे.

बाल-पाठकों के द्वारा इस तरह इस अंक की जो कहानी सर्वश्रेष्ठ ठहरेगी, उसके लेखक को भी ५० रुपये का एक अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा.

अपनी पसंद एकदम अलग कार्ड पर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदि के कार्डों पर नहीं. अपनी उम्र भी अवश्य लिखो. पता यह लिखो—

**संपादक, 'पराग (हमारी पसंद—२२)', पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.**

## कौआ और कोयल

कोयल ने मीठा स्वर पाया,
बन में जा कर गाया.
कौए का जैसा भी स्वर था,
आ कर सुबह जगाया.

कोयल अच्छी है, गाती है,
पर कौए ने आ कर—
भगा दिया मेरे आलस को,
मुझ को सुबह जगा कर!

—श्रीप्रसाद

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है. क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है. इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है.

## नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

## मिस्टर चूहेराम

उलझन में हैं कई दिनों से
मिला नहीं आराम,
किया नहीं कुछ, करने को तो
और बहुत थे काम.

खुशबू आती, समझ न पाते,
कहां धरे हैं आम?
कूदे कूदे फिरते रहते
मिस्टर चूहेराम!

—सुधाकर दीक्षित

## हाथी की हार

एक दौड़ में हाथी ने जब
मात हिरन से खाई,
जंगल वालों ने तब उसकी,
खिल्ली खूब उड़ाई!

हाथी भाई लगे सोचने—
मौत हमारी आई!
चुल्लू भर पानी में जा कर
डूब मरेंगे, भाई!

—मंगरूराम मिश्र

kissekahani.com

## आधा दान

कहे भिखारी, "अंधा हूं मैं,
दे दो, जी, दो आने!"
दाता बोले, "झूठ अजी, तुम
एक आंख के काने!"

कहे भिखारी, "लेकिन, बाबू,
काटो मत यूं कन्नी,
काना हूं तो रखो हाथ पर
केवल एक इकन्नी!"

## नया 'पराग'

गीदड़ बोला, "भालू मामा,
खेलें चलो, कबड्डी!"
आंख चढ़ा कर भालू बोला,
"चटका दूंगा हड्डी!

परेशान मत कर, बेमतलब,
अपने घर को भाग,
मजा आ रहा, पढ़ता हूं मैं
आया नया 'पराग'!"

—यादराम 'रसेंद्र'

# हाथ में दिनमान मुठ्ठी में दुनिया

मनाकामी नेता का भाषण, सृजनशील कलाकार की रचना, धरती के नीचे अणु-बम परीक्षण, शल्यक्रिया द्वारा नये हृदय, नये कंकड़ों का रोपण : दलबदलू की कलाबाज़ी और भारत-कैमरी के दाँव-पेंच इन सब में ज़मीन आसमान का फ़र्क है पर यह ज़मीन-आसमान उसी दुनिया का है जिसमें आप रहते हैं, साँस लेते हैं, और इरादे बाँधते हैं।

पानी जिस दुनिया को और उसके हर फेर-बदल को जानना समझना आप के जीने की शर्त है।

उसी दुनिया का सही, सटीक, प्रामाणिक, निर्भीक, नपा-तुला और विवेकयुक्त चित्र दिनमान के ४८ पृष्ठ प्रति सप्ताह आप के सामने रखते हैं।

जिस के हाथ में दिनमान है उसकी मुठ्ठी में दुनिया है।

साप्ताहिक

# दिनमान

मूल्य ५० पैसे

प्रति रविवार को टाइम्स ऑफ इण्डिया, दिल्ली से प्रकाशित,

# क्लोरोफार्म और उसके जन्मदाता

लगभग १५० साल पहले की बात है. एडिनबरा के एक अस्पताल में एक रोगी के हाथ-पांव रस्सियों से जकड़े ए थे. उसकी एक टांग को दो आदमियों ने कस कर ा रखा था. और उस टांग को काट कर उसके शरीर अलग कर देने के लिए उस पर उसी भांति आरा चलाया ा रहा था, जैसे लकड़ी को चीरने के लिए चलाया जाता रोगी दर्द से चीख कर, इस भयानक तकलीफ को सह पाने के कारण, कुछ ही देर बाद बेहोश हो गया.

जानते हो, बच्चो, यह क्या हो रहा था? उस रोगी पैर में एक विषैला घाव हो गया था और उसकी प्राण-क्षा के लिए उसकी टांग काट कर अलग करने के अलावा क्टरों के पास और कोई उपाय नहीं था. पर उस समय क किसी ऐसी औषधि का आविष्कार नहीं हुआ था, सके प्रयोग से रोगी का कोई अंग काटते समय उसे किसी कलीफ का अनुभव न हो.

एडिनबरा के उस अस्पताल में दिल हिला देने वाले स आपरेशन को देख कर चिकित्सा-विज्ञान का एक ठारह वर्षीय छात्र मूर्च्छित होते होते बचा था. और उसी दन उस कोमल-हृदय, किंतु दृढ़-प्रतिज्ञ छात्र ने यह निश्चय कर लिया कि शिक्षा पूरी करने के बाद वह अपना ारा जीवन रोगियों को इस भयानक कष्ट से छुटकारा दिलाने का साधन ढूंढ़ निकालने में लगा देगा.

अंतमें उस कर्मयोगी छात्र ने वही कर दिखाया, जो उसने निश्चय कर लिया था. अथक परिश्रम और अपने प्राणों की बाजी लगा कर आखिर एक दिन उसने वह साधन ढूंढ़ निकाला, जिसके लिए चिकित्सा-विज्ञान ही नहीं, समूची मानव जाति सदा उसके प्रति ऋणी रहेगी. ४ नवंबर १८४७ ई. को उस छात्र ने क्लोरोफार्म नाम के रासायनिक द्रव्य को खोज निकाला, जिसने आपरेशन के समय रोगियों को भयंकर पीड़ा और सभी कष्टों से छुटकारा दिला दिया.

क्या तुम क्लोरोफार्म के इस महान आविष्कारक का नाम जानते हो? उसका नाम है जेम्स यंग सिम्पसन. उसका जन्म एडिनबरा से लगभग ३२ किलोमीटर दूर बाथगेट नामक एक छोटे-से गांव में ७ जून १८११ ई. को हुआ था. वह अपने पिता की आठवीं संतान था. सिम्पसन के माता-पिता बहुत निर्धन थे.

बड़ा होने पर सिम्पसन गांव के स्कूल में जाने लगा. उसकी बुद्धि बड़ी ही कुशाग्र और विलक्षण थी. चौदह वर्ष की उम्र में सिम्पसन ने स्कूल की अंतिम परीक्षा सम्मान के साथ उत्तीर्ण की और आसानी से उसका दाखिला एडिनबरा विश्वविद्यालय में हो गया.

दो वर्ष बाद ही उसने चिकित्सा-विज्ञान पढ़ना शुरू कर दिया और दो साल के अथक परिश्रम के बाद अठारह वर्ष की उम्र में उसने डाक्टरी की परीक्षा भी बड़े सम्मान के साथ उत्तीर्ण कर ली.

डाक्टर बनने के बाद सिम्पसन ने एडिनबरा में ही अपनी प्रैक्टिस शुरू कर दी. कुशल चिकित्सा के कारण जल्दी ही उसकी ख्याति चारों ओर फैल गई. कुछ दिनों के बाद उसकी नियुक्ति एडिनबरा विश्वविद्यालय में चिकित्सक-अध्यापक के पद पर हो गई.

धीरे धीरे डाक्टर सिम्पसन अपनी सफल चिकित्सा और आपरेशन के लिए यूरोप भर में प्रसिद्ध हो गया. रोगियों को आपरेशन के समय भयानक कष्ट से छुटकारा दिलाने के लिए वह अब अपनी खोज के काम में तेजी से जुट गया. इस काम में उसके दो अध्यापक साथी भी सहयोग देने को तैयार हो गए, जिनमें एक का नाम था डा. कीथ और दूसरे का डा. डंकन.

आखिर एक शाम को शोध करते समय अचानक सिम्पसन की निगाह अपने सहयोगी डा. कीथ की ओर गई, जो तेज गंधवाली एक शीशी सूंघ रहे थे. सिम्पसन ने बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि कीथ उस द्रव्य को सूंघने के साथ ही साथ शिथिल होते जा रहे हैं. दो मिनिट बाद ही वह बेसुध होकर कुर्सी पर गिर पड़े. सिम्पसन और डंकन ने भी तुरंत उस शीशी को सूंघा और वे दोनों भी अचेत हो कर जमीन पर लुढ़क गए.

कुछ देर बाद सिम्पसन की पत्नी और बहन किसी काम से जब कमरे में आईं, तो उन तीनों को बेहोश पा कर पहले तो उन दोनों ने यह समझा कि इन शोध-कार्यों ने उन तीनों वैज्ञानिकों की जानें ले लीं, पर नाड़ी देखने पर मालूम हुआ कि वे जीवित हैं.

सबसे पहले सिम्पसन ने अपनी आंखें खोलीं. उसकी पत्नी ने व्याकुल होते हुए उसकी तबीयत के बारे में पूछा. सिम्पसन ने अपनी पत्नी की बातों का जवाब न दे कर, खुशी से पागल होते हुए कहा, "मैं जीत गया! अब हम लाखों-करोड़ों दुखी मनुष्यों को रोग और पीड़ा से छुटकारा दिलाने में सफल हो जाएंगे."

और इस तरह सिम्पसन और उसके दोनों सहयोगियों ने अपनी जान की बाजी लगा कर ४ नवंबर १८४७ ई. को क्लोरोफार्म का आविष्कार किया.

**—राधेश्याम बरनवाल लहर**

**द्वारा बरनवाल स्टूडियो, बसनही बाजार, मीरजापुर**

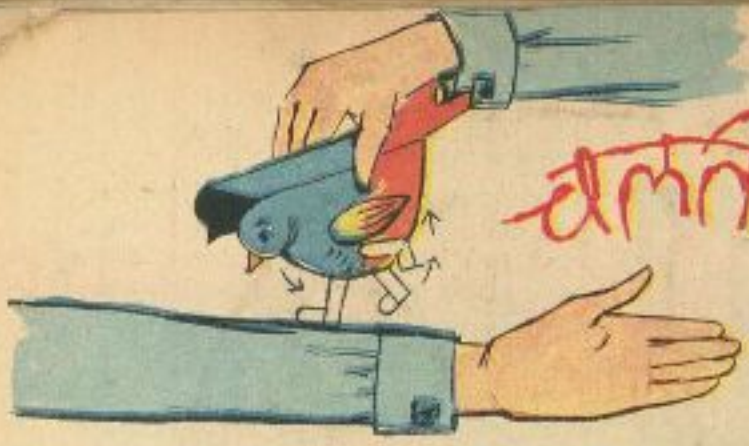

# चलती-फिरती चिड़िया

- अरुणकुमार

लो बच्चो, आ गया चिड़ियावाला (चिड़ीमार नहीं!). इससे एक चिड़िया खरीदो ५० पैसे में, और 'पराग' की यह प्रति मुफ्त में. हां थोड़ा-सा परिश्रम तुम्हें भी करना पड़ेगा.

सामने के पूरे पृष्ठ को हाशिए की दानेदार रेखा पर काट लो. इसकी पीठ पर लेई लगा कर इसे पोस्ट कार्ड जितने मोटे और कड़े कागज पर चिपका दो. फिर सूखने के लिए किताबों के बीच में दबा दो. जब यह सूख जाएगा, तो सदा की भांति एकदम सीधा निकलेगा.

अब इस कागज पर से चिड़िया और पैरों के गोल घेरे की आकृतियां, बाहरी रेखाओं पर, सफाई के साथ काट लो. चिड़िया की आकृति 'अ' वाले दो सफेद गोले भी काट कर फेंक दो.

चिड़िया की आकृति पर, तीनों दानेदार रेखाओं पर, पाटी या पैमाने की सहायता से, चाकू से हल्की-सी काटती हुई रेखाएं खींचो. इससे इन्हें मोड़ने में आसानी रहेगी. चिड़िया के दोनों ओर के पंखों को, उनकी दानेदार रेखाओं पर, नमूना आकृति-१ की तरह, नीचे की ओर मोड़ दो.

पैरों के गोल घेरे को लो. इसका 'ब' वाला छोटा-सा सफेद सूराख काट कर फेंक दो. घेरे के पांचों पैरों को, नमूना आकृति-२ की तरह, पीछे की ओर मोड़ दो.

इस घेरे के बीच के 'ब' सूराख के आरपार एक लैमन पीने का स्ट्रा-पाइप डालो. बीच में इस पाइप और घेरे पर, दोनों ओर, एक एक टेप का टुकड़ा चिपका दो. इससे पाइप इसमें से अपने आप नहीं निकलेगा. देखो नमूना आकृति-३.

नमूना आकृति-१

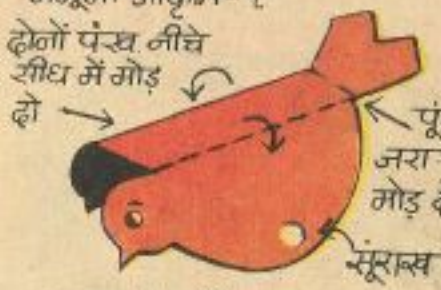


नमूना आकृति-२

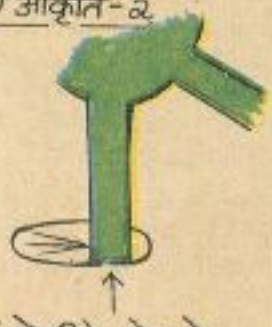


नमूना आकृति-३

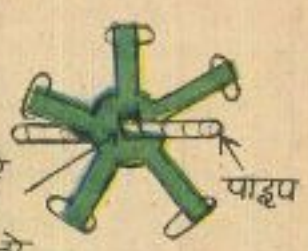


नमूना आकृति-४

kissekahani.com

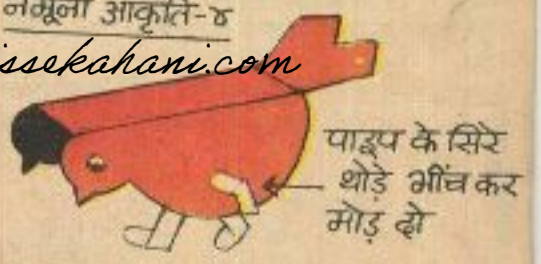

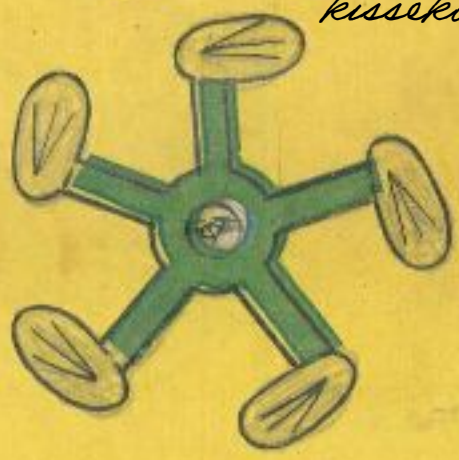

kissekahani.com

अब पाइप को दोनों ओर से, चिड़िया के अंदर की तरफ से, उसके 'अ' वाले सूराखों में घुसा दो. उस पाइप के सिरे दोनों ओर थोड़े से भींच कर मोड़ दो. इस चिड़िया के पंख पाइप में से नहीं निकल पाएंगे. देखो नमूना आकृति–४. पूंछ को उसकी दानेदार रेखा पर थोड़ा ऊपर की तरफ मोड़ो.

लो, हो गई चिड़िया तैयार. चाहो तो इसकी चोंच में धागा डाल कर इसे मेज पर या फर्श पर चलाओ, चाहे अपनी बांह पर चलाओ. जरा तेजी से चलाओगे, तो बराबर पैर उठाती और रखती मालूम होगी. अगले महीने हम एक और मजेदार खेल तुम्हारे खिलौनों के डिब्बे के लिए लाएंगे. तैयार रहना. ●